शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 21, अंक 05, फरवरी 2022

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

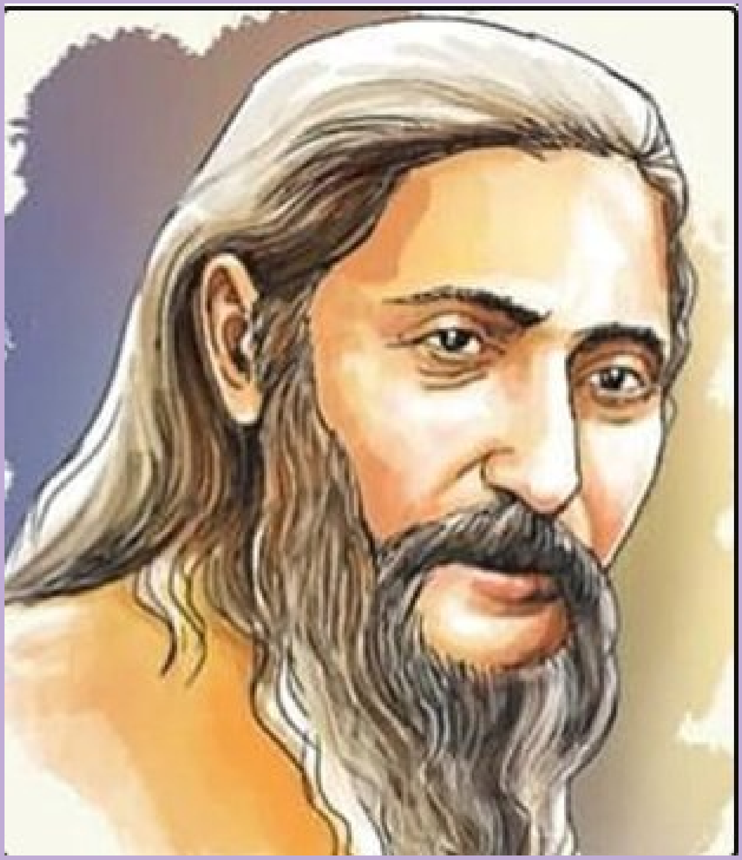

पल्लव-पल्लव पर हरियाली फूटी, लहरी डाली-डाली,
बोली कोयल, कलि की प्याली मधु भरकर तरु पर उफनाई।
झोंके पुरवाई के लगते, बादल के दल नभ पर भगते,
कितने मन सो-सोकर जगते, नयनों में भावुकता छाई।

मूल्य : 15 रुपये

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तेः 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. प्रतियोगिता दो चरणों में होगी. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। आयोजन स्थल पर ही एक विषय दिया जाएगा। दिए गए विषय पर 30 मिनट के अंदर रचना लिखकर देनी होगी और उसी रचना का काव्य पाठ करना होगा। 3. द्वितीय चरण के विजेता को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा शेष प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

चतुर्थ लघु कथा सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5001/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तेः 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. मौलिकता का प्रमाण पत्र देना अनिवार्य होगा। प्रतियोगिता के दो चरण है। दूसरे चरण के समस्त प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र दिया जाएगा। विजयी प्रतिभागी को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। विजेता को ५००१रुपये नगर, स्मृति चिन्ह तथा लघु कथा सम्राट का ताज प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये तीन सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 मार्च 2022

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं० 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:21, अंक: 05
फरवरी : 2022

इस अंक में......

गणतंत्र दिवस की महक है सबसे न्यारी...........6

देश की धरती..............10

संस्कृत भाषा में रचित राम कथा....................13

जिंदगी को समय और परिस्थितियों के अनुसार ढ़ालना जीवन जीने का मूल मंत्र....................20

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः **स्वार्थ और अहंकार** 04
हिन्दी में जजमेंट का संकल्पः न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त 08
ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन 09
गुरु गोविंद दोनों खड़े काको लागू पाए 12
ऐसा देश है मेरा 16
अध्यात्म : यज्ञ से स्वर्गिक आनंद 17
संस्मरण : चलो बुलावा आया है 35
फिल्म मेले में यादगार व शानदार फिल्में 39
धैर्य रखिए 40
कविताए/गीत/ग़ज़लः राजेश 'बनारसी बाबू', डॉ० अशोक कुमार शर्मा, डॉ० माध्वी बोरसे, डॉ० अवधेश कुमार अवध, डॉ० सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी, पं. ईश्वरी प्रसाद तिवारी, स्व० विजय कुमार सम्पत्त, प्रो० सी०बी०श्रीवास्तव 'विदग्ध', रामचरण यादव, रमेश चन्द्र पाण्डेय 19, 21, 27–29
कहानीः नाबालिग, आजादी के दिवाने 22, 32
साहित्य समाचार, ...7, 25, 30, 31
लघु कथाएंः डॉ0 शैल चन्द्रा, डॉ0 अशोक कुमार शर्मा, ...33

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सहयोगी संपादक
डॉ० सीमा वर्मा

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 **का0:** 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

स्वार्थ और अहंकार

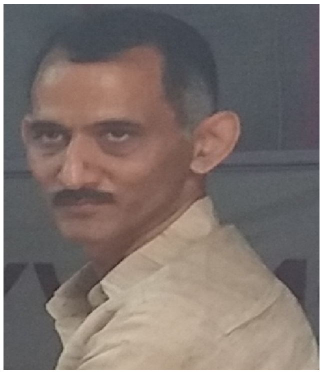

अक्सर सूखे हुए होठों से ही होती है मीठी बातें,
प्यास बुझ जाए तो अल्फाज और इन्सान दोनों बदल जाते हैं।

वर्तमान परिवेश में स्वार्थपरता और अहंकार इतना अधिक समाज व जनमानस के दिलो दिमाग पर हावी हो गया है कि बिना स्वार्थ के खास रिश्ते भी नगण्य हो जाते है और जहां स्वार्थ निहित है वहां दूर से दूर का रिश्ता भी खास बन जाता है। कहने का अभिप्राय यह कि सारे रिश्ते अब स्वार्थ पर बनते बिगड़ते है। बिना स्वार्थ के तो ईश्वर से भी रिश्ता नहीं रखता इन्सान, इक्कीस रुपये के प्रसाद में पूरी दुनिया की लालसा रखता है, और वो भी चढ़ाएगा काम पूरा होने के बाद।

जिसके पास न विद्या, न धन है और न ही कोई प्रतिभा है वह भी अहंकार में डूबा हुआ है। आईए स्वार्थ और अहंकार पर कुछ बाते करते हैः

स्वार्थ अच्छा है या बुरा?: 'स्वार्थ का मतलब यह नहीं है कि आप इसे जिस तरह से चाहते हैं, उसे जीने के लिए, दूसरों के लिए भी एक तरह से जीने की ज़रूरत है।' ऑस्कर वाइल्ड।

मां ने अपने लापरवाह बेटे को डांटा, जिसने केक का आखिरी टुकड़ा खाया। लड़का नीची आँखों के साथ खड़ा है। वह अपने कृत्य पर अविश्वसनीय रूप से शर्मिंदा है। जब वह बड़ा होगा, तो कोई और उसे स्वार्थी नहीं कहेगा। वह हमेशा दूसरों को याद रखेगा, उनके साथ अपनी सबसे प्यारी बातें भी साझा करेगा। और केक का यह टुकड़ा, जल्दी में खाया, अब बहुत कड़वा लगता है। या आँसू से है? भयानक, अब छोटी बहन को इलाज नहीं मिलेगा। लेकिन केक इतना स्वादिष्ट था। एक बच्चे के रूप में, हम अक्सर अपने माता-पिता से सुनते हैं स्वार्थी मत बनो।

शब्द 'अहंकार' का सार अलग-अलग लोगों द्वारा उनके जीवन के विकास के आधार पर अलग-अलग तरीकों से समझा जाता है। एक व्यक्ति के लिए उसके व्यवहार में आदर्श है, दूसरे को भयानक अहंकार लगता है। अधिकांश लोगों का मानना है कि स्वार्थ अपने लाभ, अन्य लोगों के हितों के लिए अपने हितों की प्राथमिकता के लिए एक व्यक्ति की चिंता है। एक नियम के रूप में, इस शब्द का उपयोग बहुत बुरे व्यक्ति के पर्याय के रूप में किया जाता है। मेरी राय में, स्वार्थी लोग वे हैं, जो अपने बारे में बिल्कुल भी परवाह नहीं करते हैं। वे किसी भी तरह से अपनी क्षणिक कमजोरियों को प्रोत्साहित करते हैं और भीड़ का नेतृत्व करते हैं। उन पर कोई भी रवैया थोपना आसान है। एक नियम के रूप में, वे उन लोगों के लिए भाषणों की तरह चिपके रहते हैं जिन्हें स्वार्थी और संकीर्णतावादी कहा जाता है।

एक व्यक्ति जो खुद से प्यार करता है, अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखना जानता है, कैसे जानता है, और अपने रहने की स्थिति में सुधार करना पसंद करता है, वह अपने भविष्य और अपने प्रियजनों के भविष्य के बारे में परवाह करता है, वह किसी को भी अपनी कठिनाइयों के साथ बोझ नहीं करता है, वह उन्हें खुद हल करता है। एक आत्म-प्यार करने वाला व्यक्ति कभी भी धोखे, चालाक, चापलूसी का शिकार नहीं होगा। वह गलत विचारों और कार्यों से गंदा नहीं होगा। वह स्वार्थी नहीं है।

जीवन में 'स्वस्थ अहंकार' को होना चाहिए? स्वार्थ को मैं आंतरिक मूल्य और आत्मसम्मान कहता हूं। एक आदमी अपने और अपने विकास के लिए प्यार पैदा करता है, वह खुद को, अपने भाग्य को खोजने में एक लक्ष्य

पाता है। ऐसा व्यक्ति अपने मन पर भरोसा करके जीता है। उसे अधिकार की आवश्यकता नहीं है, वह अपने दिल के अंदरूनी आंदोलन द्वारा निर्देशित है। वह स्वतंत्र और अन्य लोगों की राय और विश्वदृष्टि से मुक्त है। वह अन्य लोगों के 'अच्छे' के लिए बलिदान करके खुद को इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देता है। और, खुद को रिश्ते के परिणामस्वरूप, वह खुद को अन्य लोगों का उपयोग करने की अनुमति नहीं देता है (दूसरों को अपने समान प्यार करो)। बुद्धिमान अहंकारी जानता है कि किसी को एक समान निष्पक्ष विनिमय में भाग लेना है, अन्य प्रकार के आदान-प्रदान से बहुत निराशा और दर्द होता है। यह एक वयस्क है जो अपने विकास में आगे बढ़ रहा है। वह खुद को और अपने आसपास के स्थान को विकसित करता है। वह जीवन का विकास करता है।

स्वार्थ मानव विकास का स्तर है। यह केवल समय, जीवन सबक और शायद एक से अधिक जीवन को बदलने के लिए लेता है। एक अहंकारी हमेशा क्षणिक जरूरतों के बारे में सोचता है, उसके पास अपने आत्म-संयम और विकास के लिए इच्छाशक्ति और आंतरिक भावना नहीं है। न तो धर्म और न ही अपने नैतिक और कानूनी सिद्धांतों के साथ राज्य अहंकार को बदल सकते हैं।

सार के रुप में हम यह कह सकते है कि स्वार्थ और अहंकार का मानव के अंदर होना जरुरी है लेकिन इतना कम भी नहीं होना चाहिए अपना वजूद बेचना पड़े और इतना अधिक भी नहीं होना चाहिए कि कल को रिश्ते टूट जाएं।

रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओं से हुई है,
तो टूटना मुश्किल है और अगर स्वार्थ से हुई है,
तो टिकना मुश्किल है।

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का मार्च-२०२२ का अंक छत्तीसगढ़ पर केन्द्रित होगा। जिसमें केवल छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों की रचनाएं होगी। इसमें छत्तीसगढ़ के प्रमुख स्थल, मुख्य जानकारियों के साथ ही साथ, विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं, कहानियां, लघु कथाएं, संस्मरण एवं व्यंग्य होगे।

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का जून-२०२२ का अंक कर्नाटक पर केन्द्रित होगा। जिसमें केवल कर्नाटक़ के साहित्यकारों की रचनाएं होगी। इसमें कर्नाटक के प्रमुख स्थल, मुख्य जानकारियों के साथ ही साथ, विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं, कहानियां, लघु कथाएं, संस्मरण एवं व्यंग्य होगे।

उपरोक्त दोनों अंकों का संपादन विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उ०प्र० के छत्तीसगढ़ एवं कर्नाटक इकाई के पदाधिकारियों द्वारा सम्पादित किए जाएंगे। अपनी प्रति अभी सुरक्षित करा लें।

एक प्रति-25/रुपये, **खाता संख्या**–66600200000154, आईएफएससी कोड–BARB0VJPREE सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई-मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

गणतंत्र दिवस की महक है सबसे न्यारी

-डा. मोतीलाल गुप्ता 'आदित्य'
निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन।

भारतीय संस्कृति और अस्मिता के साथ-साथ सभी भारतवासियो, सभी भारत-प्रेमियों, भारतीय भाषा प्रेमियों और भारतीय गीत-संगीत के प्रेमियों के लिए यह गणतंत्र दिवस बहुत ही विशेष है। जो अब तक न हुआ अब हो रहा है, यह देख कर सभी भारतवासियों का सीना आज गर्व से चौड़ा हो रहा है। पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्रवासियों के लिए यह गणतंत्र दिवस इन राज्यों की माटी की महक और संवेदनाओं से भी जुड़ा हुआ है। भारतीय सेना और सेना के शहीदों के परिवारों लिए भी यह गणतंत्र दिवस एक नई खुशी लेकर आया है। यह गणतंत्र दिवस अनेक परिवर्तनों के साथ भारत की माटी की महक ले कर आया है।

गणतंत्र दिवस के आयोजन नेताजी की जयंती से गांधी जी की पुण्यतिथि तक।

जहाँ तक इंडिया गेट के इतिहास की बात है तो अंग्रेजों द्वारा प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए अपने सैनिकों की याद में बनवाया था। ड्यूक ऑफ़ कनॉट ने 10 फरवरी 1921 को वॉर मेमोरियल यानी इंडिया गेट का शिलान्यास किया था. ड्यूक ऑफ़ कनॉट के नाम पर ही कनॉट प्लेस का नाम रखा गया था. इसके लिए वृताकार प्रिंसेस पार्क के केन्द्र में स्थान चुना गया. सर एडवर्ड लुटियन्स ने इसका और छतरी का डिजाइन एक साथ बनाया था। शिलान्यास के दस वर्ष बाद 12 फरवरी, 1931 को इंडिया गेट का उद्घाटन हुआ था।

सम्राट जार्ज पंचम के नेतृत्व में कोरोनेशन पार्क में 11 दिसंबर, 1911 को आयोजित दरबार में ऐलान हुआ था कि भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली में स्थानांतरित की जाएगी। इसके चलते 1938 में स्थापित सम्राट जॉर्ज पंचम की मूर्ति इंडिया गेट पर इक्कीस सालों तक लगी रही। यह हमारी स्वतंत्रता के उपहास जैसा था। 1968 में उसे इंडिया गेट से उतारकर उत्तर-पश्चिम दिल्ली के बुराड़ी के पास स्थित कोरोनेशन पार्क में पहुंचाया गया, वहां ब्रिटिश दौर के अनेक अंग्रेजों की मूर्तियां बिखरी पड़ी हैं। 1968 में उसे इंडिया गेट से उतारने के पश्चात वहां पर महात्मा गांधी की प्रतिमा लगाने की चर्चाएं भी सालों तक चलीं, लेकिन कभी ऐसा हुआ नहीं।

भारतीय सेना के अधिकारियों व संबंधित अधिकारियों आदि को छोड़कर शायद ही किसीने 'एबाइड विद मी' नामक किसी धुन के बारे नें कोई जानता होगा। अंग्रेज बीटिंग रिट्रीट आदि में इसे बजाते थे और उनकी देखा-देखी या औपनिवेशिक मानसिकता के चलते हमने भी 1950 से गणतंत्र दिवस आयोजन के समापन बीटिंग रिट्रीट आदि परहमने भी उसे बजवाना शुरु कर दिया था।

इस साल बीटिंग रिट्रीट में ऐ मेरे वतन के लोगों की धुन की गूंज सुनाई देगी जिसे भारत-चीन युद्ध के बलिदानियों की याद में कवि प्रदीप ने लिखा था, जिसे सी० रामचंद्र ने संगीत दिया था और आवाज मशहूर गायिका लता मंगेशकर ने दी थी। मोदी सरकार ने भारतवासियों के लिए अनजान सी उस अंग्रेजी धुन के स्थान पर उस धुन को बजाने को निर्णय लिया जिससे हर भारतवासी के हृदय में देश-प्रेम की तरंगे हिलोरे लेने लगती हैं। 1962 के चीनी आक्रमण के समय मारे गए भारतीय सैनिकों को

समर्पित 'ऐ मेरे वतन के लोगो' एक हिंदी देशभक्ति गीत है जिसे कवि प्रदीप ने लिखा था और इसे लता मंगेशकर ने इसे नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस पर गाया था। कोई स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस ऐसा नहीं होगा जिस अवसर पर यह गीत देश के कोने-कोने में करोड़ों जगह न बजता हो। इस गीत के माध्यम से देशवासी देश के शहीद सैनिकों के बलिदान की मार्मिकता से द्रवित हो कर देश-प्रेम से सराबोर होते हैं।

'ऐ मेरे वतन के लोगो' के माध्यम से भारतीय भाषाओं, भारतीय साहित्यकार व भारतीय कलाकारों का सम्मान।

'ऐ मेरे वतन के लोगो' गीत को गणतंत्र दिवस की धुन बनाना राष्ट्र की भाषा के गीत को सम्मिलित करना भारतीय भाषाओं का भी सम्मान है। यह उन महान कलाकारों का भी सम्मान है जिनके माध्यम से यह साकार हुआ। भारत कोकिला, भारत रत्न लता मंगेशकर, अनेक पीढ़ियों ने अपनी भावनाओं को उनके गीतों में तलाशा है। जिनकी लोकप्रियता को किसी भौगोलिक या समय सीमा में नहीं बांधा जा सकता, इसी प्रकार कवि प्रदीप और संगीतकार सी रामचंद्र भी अपने क्षेत्र के विख्यात कलाकार रहे हैं। लेकिन मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र, जिन राज्यों से ये थे उनके मन में इनके प्रति एक विशेष लगाव है। भारत गौरव नेताजी सुभाष चंद्र बोस जो हर भारतवासी का गौरव हैं लेकिन बंगाल के लोगों को उनमें और अधिक अपनापन दिखता है।

तुलसी/रत्नावली सम्मान-2022 हेतु प्रविष्ठियां आमंत्रित है

इस वर्ष के तुलसी/रत्नावली सम्मान-2022 हिन्दी साहित्य की प्रमुख विधाओं पर साहित्यकारों की जनवरी-2016 से 30 मई-2022 के मध्य प्रकाशित कृतियों को आधार मानकर प्रदान किये जाने का निर्णय लिया गया है। प्रमुख सम्मान हैं -
1— तुलसी शिखर सम्मान - 2022 - समग्र लेखन के लिए एक पुरुष साहित्यकार को, 2— रत्नावली शिखर सम्मान-2022 - समग्र लेखन के लिए एक महिला साहित्यकार को, 3- तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022 - उत्कृष्ट गीत सृजन हेतु, 4— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022 - उत्कृष्ट ग़ज़ल सृजन हेतु, 5— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022 - उत्कृष्ट नवगीत सृजन हेतु, 6— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022 - उत्कृष्ट कहानी सृजन हेतु, 7— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022- उत्कृष्ट लघु कथा सृजन हेतु, 8— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022 - उत्कृष्ट कविता सृजन हेतु, 9— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022- उत्कृष्ट बाल साहित्य सृजन हेतु, 10— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022- उत्कृष्ट उपन्यास सृजन हेतु, 11— तुलसी /रत्नावली सम्मान-2022- उत्कृष्ट नाटक सृजन हेतु, 12— तुलसी /रत्नावली सम्मान-२०२२- उत्कृष्ट समीक्षा वृतांत कृति सृजन हेतु,
उपरोक्त सभी सम्मान साहित्यकारों द्वारा प्रविष्टि के साथ प्रेषित कृतियों पर तुलसी/ रत्नावली सम्मान-२०२२ सम्मानों हेतु गठित चयन समिति की अनुसंशा के आधार पर नवम्बर- २०२२ में भोपाल में आयोजित गरिमामय समारोह में प्रदान किए जाएंगे। चयनित साहित्यकारों की सम्मान समारोह में उपस्थिति प्रार्थनीय/अनिवार्य होगी। साहित्यकार को समारोह में आने-जाने का मार्ग व्यय देय नहीं होगा किन्तु ठहरने एवं भोजन आदि पर आने वाला समस्त व्यय अकादमी द्वारा वहन किया जायेगा। अतः अनुरोध है कि साहित्यकार अपना जीवन परिचय, रंगीन पासपोर्ट साइज के दो फोटो, कृति की दो प्रतियाँ सहित 31 जुलाई-2022 तक, निम्नांकित पते पर पहुँचाना प्रार्थनीय है।
विशेष स्मरणीय है कि- ''कृपया किसी भी प्रकार का प्रविष्टि शुल्क नहीं भेजें।''
प्रविटियाँ भेजने हेतु पता-

डॉ-मोहन तिवारी 'आनंद'
अध्यक्ष, तुलसी साहित्य अकादमी, सुन्दरम बंगला, 50, महाबली नगर,
कोलार रोड भोपाल-462042,
मोबा- 9827244327, 8989349312,

हिन्दी के योद्धा : पुण्यतिथि पर

हिन्दी में 'जजमेंट' का संकल्प : न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त

- प्रो. अमरनाथ
कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी
विभागाध्यक्ष व हिंदी-सेनानी हैं।

इटावा, उत्तर प्रदेश में जन्मे, इटावा तथा इलाहाबाद में पढ़े-लिखे, न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त (15.07. 1930–3.01.2013) हिन्दी में फैसला सुनाने वाले अन्यतम न्यायाधीश के रूप में विख्यात हैं. 1977 ई. में वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर नियुक्त हुए. हिन्दी में कार्य करने और निर्णय देने की प्रेरणा उन्हें न्यायमूर्ति कुँवर बहादुर अस्थाना से मिली. न्यायमूर्ति अस्थाना ने 14 सितंबर 1973 को मीसा से संबंधित एक महत्वपूर्ण मुकदमे में हिन्दी में निर्णय दिया था. इस निर्णय ने उन्हें प्रेरणा के साथ ताकत भी दी थी. गुप्त जी जब एकल पीठ में होते तो सारी कार्यवाही हिन्दी में करते और पीठ के समक्ष समागत वकीलों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा भी देते. 25 नवंबर 1977 को उन्होंने अपना पहला निर्णय हिन्दी में दिया. आगे चलकर उन्होंने हिन्दी को अपनी कार्यप्रणाली का हिस्सा बना लिया. कहा जाता है कि हिन्दी में दिए गए उनके फैसलों की संख्या चार हजार से अधिक है. यह कार्य उन्होंने अपने पंद्रह वर्ष के सेवा काल में किया.

उच्च न्यायालय में न्यायाधीश बनने से पहले प्रेमशंकर गुप्त उपशासकीय अधिवक्ता, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद, फिर शासकीय अधिवक्ता, खंड पीठ लखनऊ और इसके बाद शासकीय अधिवक्ता इलाहाबाद रह चुके थे. अधिवक्ता के रूप में भी अवसर मिलने पर वे हिन्दी में बहस करने से नहीं चूकते थे. 17 नवंबर 1977 को वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न्यायाधीश नियुक्त हुए. इस पद पर वे सेवानिवृत्ति पर्यंत अर्थात 14 अगस्त 1992 तक रहे.

न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त के हिन्दी में निर्णय देने का न्यायपालिका में दूरगामी प्रभाव पड़ा. हिन्दी प्रेमियों के लिए वे प्रेरणा के स्रोत बन गए. इनके हिन्दी प्रेम के कारण उच्च न्यायालय में जहाँ केवल अंग्रेजी में काम होता था अधिवक्तागण व अधिकारियों ने हिन्दी में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया. न्यायाधीश के रूप में अपने 15 वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने 4 हजार से अधिक फैसले राजभाषा हिन्दी में देकर कीर्तिमान स्थापित किया.

न्यायमूर्ति प्रेम शंकर गुप्त के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम बचपन में ही जग गया था. इटावा के सनातन धर्म स्कूल में जब वे अध्ययनरत थे तभी उनकी कक्षा के अध्यापक उनके गुरू स्वर्गीय श्री शिशुपाल सिंह भदौरिया ञशिशुञ ने उनके भीतर राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम पैदा कर दिया था. स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान रचित अपनी भावपूर्ण एवं ओजस्वी कविताओं के माध्यम से उन्होंने अपने विद्यार्थियों के मन में राष्ट्र प्रेम एवं उसी के साथ राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम का जो बीज बोया उसे प्रेमशंकर गुप्त ने जीवन में उतार लिया और उसे अपने जीवन का पाथेय बना लिया.

निश्चित रूप से न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त ने विधि के क्षेत्र में अपने हिन्दी प्रेम एवं भारतीय संस्कृति के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया है. वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी

थे. हिन्दी के प्रति प्रेम के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति, समाज और अध्यात्म के क्षेत्र में भी उनकी सक्रियता बराबर देखी जा सकती थी. वे हमेशा अपनी सरल, साहित्यिक व ओजस्वी वाणी से श्रोताओं के हृदय में अपनी जगह बना लेते थे. उनकी लोकप्रियता हमेशा बनी रही.

सेवानिवृत्ति के पश्चात भी गुप्त जी ने हिन्दी की प्रतिष्ठा के लिए अपना प्रयास जारी रखा. उत्तर प्रदेश की सरकार ने गुप्त जी को उनकी हिन्दी दृसेवा के लिए हिन्दी-गौरव सम्मान से अलंकृत किया. सम्मान के साथ उन्हें इक्यावन हजार नकद मिले. न्यायमूर्ति गुप्त ने अपनी तरफ से बीस हजार रूपए मिलाकर ‘हिन्दी सेवा निधि’ नाम की एक संस्था बनाई. यह संस्था उनके गृहनगर इटावा में कार्य करती है. इसके तत्वावधान में प्रतिवर्ष दो दिवसीय समारोह आयोजित होता है. इसमें हिन्दी के प्रेमियों का जमावड़ा तो होता ही है इटावा के साहित्यकारों को सम्मानित पुरस्कृत भी किया जाता है. गुप्त जी के न रहने पर भी संस्था उनके मिशन को पूरा कर रही है.

आज न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त की नौवीं पुण्यतिथि है. इस अवसर पर हम हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा और हिन्दी के हित में किए गए उनके कार्यों का स्मरण करते है और उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं.

ऑक्सीटोसिन इंन्जैक्शन

बढ़ती स्वार्थमूलक प्रवृत्ति के चलते अब गाय को “दूध देने वाली मशीन” मात्र ही समझा जाने लगा है और अधिक मात्रा में दूध प्राप्ति के लिए कही-कही खतरनाक इंजेक्शन “ऑक्सीटोसिन” का प्रयोग भी गाय पर किया जा रहा है जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। भ्रमवश ऐसा माना जाने लगा है कि इस इंजेक्शन के लगने से गाय से अधिक दूध प्राप्त हो जाता है किन्तु वास्तव में इस प्रक्रिया से दूध की मात्रा तो कोई खास बढ़ती नहीं किन्तु दूध निकलने का प्रवाह अवश्य बढ़ जाता है क्योंकि यह औषधि गर्भाश्य की संकुचन क्रिया को तीव्र कर देती है। दूध निकालने की इस घातक कृत्रिम प्रक्रिया से गायों में दुग्ध स्त्राव शक्ति तथा प्रजनन शक्ति कम होने लगती है तथा समय से पूर्व ही गाय बॉझ हो जाती है। हार्मोन के अन्य इंन्जैकशनों की भांति ही ऑक्सीटोसिन का प्रयोग भी प्रतिबन्धित है जो विशेष परिस्थितियों में ही केवल रजिस्टर्ड पशु चिकित्सकों द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। अधिकतर गायें भैसे 7 से 10 मिनट तक ही दूध देती है किन्तु स्वार्थवश वाणिज्यिक संस्थानों द्वारा गाय-भैंसा को दिन में दो बार इंजेक्शन लगाकर 15 से 20 मिनट तक प्रतिदिन दूध प्राप्त किया जा रहा है जो कि अनैतिक है। इस प्रकार से प्राप्त किये हुए दूध में ऑक्सीटोसिन की कुछ मात्रा दूध में शेष बच रहती है जो स्वास्थय के लिए अहितकर हैं। चिंता का विषय यह है कि प्रतिबन्धित होने के उपरान्त भी ऑक्सीटोसिन औषधि खुले आम अनाधिकृत प्रयोग हेतू बाजार में सर्वत्र उपलब्ध हो रही है।

-सुरजीत सिंह साहनी

57-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा कोटा, राजस्थान

देश की धरती

हमारे कृषक ही हैं, जो अतीत से आज तक अपने खून और पसीने को एक कर बहाते हुए कृषि कार्य को सॅभालते हुए फसल उगाते आ रहे हैं। अपना देश लाख विकास कर आकाश चूम ले ''ढ़ाक के सदा तीन पात'' की दशा में किसान आज भी समभाव में देखे और पाये जा रहे हैं।

-बलिराम महतो 'हरिचेरा'
भागलपुर, बिहार

जंगल पहाड़ नद-नदियों रेगिस्तानों से भरपूर। कृषि प्रधान बजड़ी बूटियों खनिजों के भंड़ारों से मशहूर।।
''मेरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती!/इतिहास साक्षी हैं कि मेरे देश की धरती !!''

हम सर्व प्रथम पूथ्वी मुक्त हैं, अतः पूथ्वी हमारी माता हैं। मिट्टी इसकी धरती है। हम जंगली और शिकारी मांसाहारी सभ्य हुए। अब हम मांसाहारी नहीं, मुख्यतः शाकाहार पर निर्भर हैं। वैसे तो पूर्व भी निश्चय ही मनुष्य मांसाहार के अतिरिक्त कंद मूल, फल-फूलों का आहार ग्रहण करता ही रहा होगा। धीरे-धीरे विकास क्रय में हम मनुष्य फसल उगाने की तरकीब से अवगत हुए। हमारी समझ बड़ती गयी। हम पूर्णतः कृषि पर आ उतरे और इसी पर निर्भर हो गये। शिकार-फिकार और हमारी हिंसा की प्रवृत्ति तथा पारस्परिक कलह भी धीरे-धीरे लोभ पा गयी वाह! अब तो हम अपने को पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ प्राणी ही मान बैठे हैं। फिर भी इस पर प्रश्न चिन्ह कायम हैं। इसे हम नकार नहीं सकते।

''हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होगें अभी।
आओं विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी!! **मैथिलीशरण गुप्त**

जब हम पृथ्वी मुक्त हैं, तो निश्चय ही पृथ्वी हमारी माता हुई। पृथ्वी की मिट्टी और इसकी सतह पर का या भूमिगत दुग्धवत् जल दोनों ही इसकी आती हैं। मॉ धरती से उपलब्ध मिट्टी और जल दोनों का समुचित उपयोग कर हम फसल उगाते और अपना जीवन यापन करते हैं धरती मॉ से इससे अधिक और हमें चाहिये ही क्या था? यही तो यथेष्टा था कहा भी गया हैं।

भुवने नीति रत्नानिसन्ति जलंअन्नं सुभाषितं।/मूढ़ैः प्रस्तर खण्डेषु रत्न संज्ञा निधीयते।।

अब जल और अन्न के अतिरिक्त अवशेष सुभारितं का सवाल हैं,

''वाणी ऐसी बोलिये मन का आत्माखोय।
औरन को शीतल करें, आपहु शीतल होय।।''

इसे ही हमें ग्रहण कर धारण कर लेना चाहिये। यदि धरती मॉ की शरण में जल और अन्न नहीं मिला होता तो हमारा हो गया था। क्या? खटिया खड़ा हो जाता। हम अस्तित्व खो बैठे तो।

सच कहा जाय तो भूमि से आज भी जुड़े धरती माता के सच्चे सेवक और संरक्षक धन्य, इस अर्थ में हमारे कृषक ही हैं, जो अतीत से आज तक अपने खून और पसीने को एक कर बहाते हुए कृषि कार्य को सॅभालते हुए फसल उगाते आ रहे हैं। अपना देश लाख विकास कर आकाश चूम ले ''ढ़ाक के सदा तीन पात'' की दशा में किसान आज भी समभाव में देखे और पाये जा रहे हैं। ''खटे लंगोटियों और खाद्य लभ द्योतिया" कहावत इन्हीं किसानों पर चरितार्थ हैं। हम भारतवासी कृषि प्रधान देश के निवासी होने के नाते कृषि पर निर्भर स्वाव-लम्बी थे और सुख-शांति पूर्वक अपना जीवन यापन करते आ रहे थे। हमारा आदर्श था ''उत्तम खेती मध्यम बाध, निषिध चाकरी भीख निदान। और भी क्या? ''खेती का कोना-कोना बने जी का दोना'' उस वक्त ग्रहस्थ जीवन का रूतबा (रौनक, महत्व) ही कुछ और था। सामान्यतया लोग अपना घर छोड़कर नौकरी करने बाहर जाना नहीं चाहते थे। घर की आधी रोटी भली थी। सम्मिलित परिवार का युग था। परिवार के सभी हसी खुशी लोग मिलजुलकर प्रेमपूर्वक रहते थे। ''बाट चोट खाय मध्य गंगा नहाय का सिंद्धान्त घर में लागू था उस समय

किसान के दरवाजे पर दुधारू गाय बछड़ा बैल प्रभृति उपस्थित श्रृंगार स्वरूप आकर्षक लगते थे। उनके

यहॉ लक्ष्मी का निवास था। आज दरवाजा सूना हैं। ट्रैक्टर से खेत की जुताई और मशीन से सिंचाई होती। सरकारी उन्नत बीज का उपयोग खेती की नयी तकनीक को अपना कर खेती की जाती हैं खेती में आज जैविक खाद की जगह रासायनिक उर्वरक खाद के साथ कीटाणुनाशक प्रवृति अन्यान्य जहरीली दवाओं का छिड़काव भी अनिवार्य रूप से एकाधिक बार किया जाता हैं। ऐसा करने पर खेती की उपज बढ़ी हैं, लेकिन पहले के अनुपात में खेती का खर्च चार गुना बढ़ गया हैं फलतः उपज की बढ़ोतरी के बावजूद भी खेती में खर्च इतना बढ़ गया हैं कि इस व्यवसाय में लाख सिर पटकने पर भी लागत पूँजी की वापसी भी मुश्किल से हो पाती हैं किसान को अपनी खेती में लाभ का मुँह देखने को नहीं मिलता ऐसा क्यों? उन्हें अक्सर यहॉ खेती में घाटे का ही सामना करना पड़ता हैं। इसके बावजूद ‘‘एक तो करैला, आम, पपीता दूजा नीम चढ़ी। खेती में मौसम साथ नहीं देखता। साल भर साला सूखा बाढ़ अनावृष्टि, अतिवृष्टि एवं ओला पत्थर वृष्टि आंधी तुफान से भी बुरी तरह प्रभावित खेती फसलों की दुर्दशा होने से धरती के धनी-गरीब खेती से जुड़े सभी किसान विवश होकर खेती से अपना मुँह मोड़ रहे हैं। खेती से सर्वतो भावे जुड़े नही किसान बचे रह गये हैं।

जिनका खेती के अलावा अपनी रोजी-रोटी के लिये अन्य कोई चारा नहीं हैं। कुछ किसान अपनी जमीन को बेचकर शहरों को रूख अपना रहे हैं और अन्य व्यवसाय से जुड़ रहे हैं। बड़े-2 किसान अपने खेतो में फलों के पेड़ और मेंड़ो पर इमारती लकड़ियों वाले पेड़ो के पौधे अंधा धुंध लगाये जा रहे हैं। इससे कुछ वर्षो पश्चात् उस भूमि में फसलें उपजाई नही जा सकेगी। कृषि मजदूर रोजगार की कमी से अपना गांव छोड़ अपनी रोजी रोटी के लिये पलायन कर अन्याय राज्यों में जाकर बिखरने लगे हैं। यहॉ मजदूरों की कमी खलने खटकने लगी हैं। जो भी बचे कुचे कृषि मजदूर हैं, वे भी मजबूर किसानों के प्रति वफादार नही रहकर पूरी मजदूरी वसूलते हैं, जबकि मनोयोग पूर्वक श्रम करने से अपना जी चुराते हैं। आबादी के बढ़ने से कृषि योग्य भूमि आवास भवनों के निर्माण में खप रही हैं। यही नहीं नयी-नयी सड़कों के निर्माण एवं पुरानी सड़कों को विस्तार होने से भी तथा रेल-पथ निर्माण (विस्तार) प्रवृति सरकार की जमीन से संबंधित अनेकानेक योजनाओं के अधीन अधिग्रहित होकर कृषि योग्य जमीन बंधक होती जा रही हैं जमीन के व्यवसाय से जुड़े धनढ्य धनी-मनी लोग सुदूर देहात में जा जाकर उपलब्ध कृषि भूमि को खरीद-खरीदकर ऊँचे दाम पर बेचकर लाभ कमाने के लिये चिन्हित और बंधक बनाये जा रहे हैं। आज देश में ऐसा माहौल बन गया हैं कि मिट्टी की ईट के निर्माण में कृषि भूमि की मिट्टी वृहत् पैमाने पर मिट्टी से ईट का स्वरूप ग्रहण कर बेरहमी से ईंट की चिमनी भट्टो में जाकर तपाई जा रही हैं। इससे फ्लॉट की फ्लॉट चक का चक जमीन खदको में परिण होती जा रही हैं। ईट की मांग दिन दूनी रात चौगनी दिनों दिन क्रमशः बढ़ती ही जा रही हैं।

ऐसा प्रतीत होता हैं कि यदि कृषि भूमि का सिमटाव इसी तरह जारी रहा तो निकट भविष्य में ही देश को इसका दुष्परिणाम देखना ही पड़ जायेगा भुगतना ही पड़ेगा। उपयुक्त परिस्थिति में देश की धरती (कृषि भूमि) त्राहि माम का गुहार करती मनुष्यों से विवश होकर कह रही हैं। हे मनुष्यों पृथ्वी पर प्राणियों में सर्व श्रेष्ठ मनुष्यों मेरे सुपुत्रों मेरी ऐसी दुर्दशा कर तुम कैसे और कहॉ खेती करोगे और छत्तीस प्रकार के भोग एवं छप्पन प्रकार के भोगों को कहॉ से उपलब्ध कर खाओगे पीयोगे और मस्त रहोगे? और भी यह कि तुम निवास कर रहोगे भी कहॉ और विचरण कहॉ करोगे? छिः छिः ऐसा मत करो ऐसा मत करो मत करो! ऐसा कर पश्चाताप करोगे! अपने पॉव में आय कुल्हाड़ी मत मारो ‘‘आदमी भी क्या अनोखा जीव होता हैं? उस को खुद अपनी बनाता आप फॅसता...। लेकिन मनुष्य हैं कि मॉ धरती की मृत्तिका ही क्यो? वह तो प्रकृति की अन्याय संपदाओं का बेरहमी से दोहन करता बौर गया हैं। वह किसी की सुनेगा भी क्या? वह हरगिज किसी बात नहीं सुनेगा। आज उसका हौसला इतना बढ़ा हैं कि उसकी जा इच्छा होगी वह उसे ही कर गुजरेगा। मानेगा नहीं। परिणाम चाहे जो हो अच्छा सा बुरा इसका

उसे गम नहीं इस धरती को मारो गोली।

वह चॉद और मंगल की धरती पर धाक जमाकर वहॉ बसेरा लेने और खुशहाल रहने की जोर-शोर से तैयारी करने में जुटा हैं। उसके क्या कहने हैं, क्या कहने हैं? देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने ‘‘शस्य श्यामला धरा हो हमारी हरित क्रांति की बाती कही थी। देश को समय सापेक्ष अपनी मंत्राणा से अवगत कराया ‘‘जय किसान, जय जवान’’ इसके तर्ज पर पहल भी हुआ सफलता भी मिली देश खुशहाल दृष्टिगोचर हुआ।

आज उनके उस स्वप्न को विस्मृत के गर्त में ड़ाल ताक पर रख देश दिक् भ्रमित हैं। जनता की थाली से दाल के छिन जाने की मार खाकर भी देश चेत नहीं रहा हैं। इसकी आपूर्ति के लिये वह दूसरे देशों का मुहताज आयात पर भरोसा मंद अपना हौसला बुलंद कर रहा हैं। उसकी यह सोच सही प्रतीत नहीं होती। कहीं ऐसा न हो कि देश को अन्न का संकट ही झेलना पड़ जाय देश में अन्न दाने के लाले पड़ जाय सुबह का भूला शाम को भी वापस होकर अपने देश को सर्वतो भावे येन क्रेन प्रकारेण कृषि को ही उन्नत बनाकर सदा सर्वदा अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो जाना चाहिये रहना चाहये। तभी अपना देश ‘‘जय किसान जय जवान’’ के उद्घोष का परचम लहराता फहराता सुखी और शांत जीवन का उपभोग कर पायेगा। इसी की पृष्ठभूमि में देश को अपनी कृषि योग्य भूमि को कम होने जाने से बचाव के लिये विकल्प ढूढ़कर उस पर पहल करना चाहिये।

गुरु गोविंद दोनो खड़े काको लागू पाए

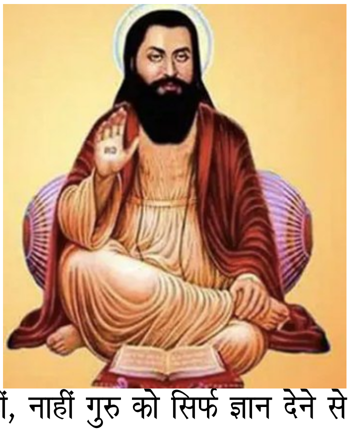

अपने देश में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊंचा कहा गया है। गुरु की भक्ति करी जाती थी। अर्जुन से भी एकलव्य की भक्ति थी। ऐसे तो अनेक उदाहरण है इतिहास में। स्वामी रामदास और शिवाजी महाराज, चाणक्य और चंद्रगुप्त, कई उदाहरणों से भरा पड़ा है हमारा इतिहास। क्या आज हम इन गुरु शिष्य के समकक्ष गुरु या शिष्य पा सकते है क्या? नही, आज शिष्य को गुरु के प्रति सम्मान नहीं, नाहीं गुरु को सिर्फ ज्ञान देने से मतलब है, व्यवसाईक बन रही है दुनिया, जब पाठशाला में पढ़ाया जाता है तो भी ट्यूटर रखना फैशन हो गई है, स्टेटस सिंबल हो गया है। नाही गुरु को शिष्य से लगाव और शिष्य को गुरु के लिए आदर है। अपने गुरु परशुराम की निद्रा भंग न हो इसलिए कर्ण ने भंवरे का उसकी जंग को कुतरने का दर्द सह लिया था, क्या वो आसन था? ये एक उदाहरण हैः ‘चरणदास की दो बड़ी शिष्याये थी। अगाध प्रेम था अपने गुरु से दयाबाई और सहजोबाई। चरणदास सुखदेव मुनि के शिष्य थे, दीक्षा के बाद 12 साल अग्यातवास में चले गए। 12 साल बाद दिल्ली में प्रगट हुए। दोनो शिष्याओ में एक तो उनके भाई केशवचंद की बेटी थी और सहजोबाई राजस्थान से आती थी। उसका हमेशा निवेदन रहता के गुरु उसकी कुटिया को पावन करे।

जब एक दिन गुरु ने कह ही दिया की तुम मेरी रतह देखना शुरू करो मैं कभी भी आ जाऊंगा। गुरु प्रेम में दीवानी ने अपने हाथों से आसन बुना और राह देख रही थी। और एक दिन चमत्कार हो ही गया, एक और से भगवान सूर्यनारायण उपर आ रहे थे, एक और से प्रभु आ रहे थे और दूसरी और से गुरु आ रहे थे। अब द्विधा ये हुई कि बैठने वाले दो और आसान एक, गुरुजी को आसन दिया और प्रभु के हाथ में पंखा रख दिया, कहा कि गुरु को हवा जलो, गर्मी बहुत है। गुरु की सेवा में परमात्मा को लगा दिया था। उन्होंने लिखा है- राम तजु पर गुरु न विसारू, गुरु के सम हरी न निहारू। हरी ने रोग भोग उर्रजायो गुरु ने जोगी कर अबे ही छुटायो,

ऐसा लिखा है सहजोबाई ने, राम को तो मैने तस्वीरों में देखा है गुरु तो साक्षात सह शरीर देखा है। इसे गुरु भक्ति कहते है। गुरु अपार सागर है बस गढ़ा खोद के रखो और गुरु द्वारा अर्जित ज्ञान से भर दो।

गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान बीज को बो लो, समय आने पर वटवक्ष बन जायेगा। शायद ये आजकल के नौ जवानों में समझ आए।

–**जयश्री बिर्मी,** निवृत्त शिक्षिका, अहमदाबाद, गुजरात

संस्कृत भाषा में रचित राम कथा

आदिकवि वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के संबंध में लिखा हैं कि गंभीरता में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं। राम के चरित्र में पग-पग पर मर्यादा त्याग, प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं। रामने साक्षात् परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया। उनका चरित्र उत्तम हैं। इसलिए तो भगवान राम के चरित्र का गहरा प्रभाव हैं और युगों-युगों तक रहेगा।

-डा. अमिता एल.टंडेल
हिन्दी विभागाध्यक्ष, रोफेल आट्स एन्ड
कोमर्स, कॉलेज, वापी, गुजरात

'वाल्मीकि रामायण' के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि माना जाता है और इसीलिए यह महाकाव्य 'आदिकाव्य' कहा जाता हैं। वाल्मीकि रामायण में राम को विष्णु का अवतार माना गया हैं। भगवान विष्णु ही राजा दशरथ के घर मनुष्य-रुप धारण कर अवतरित हुए थे। वाल्मीकि रामायण में राजा दशरथ के पुत्रेष्टि यज्ञ के समय देवतागण यज्ञ में भाग लेने के लिए उपस्थित होते हैं और वे भगवान विष्णु से लोक कल्याण हेतु रावण वध के लिए प्रार्थना करते है:

'त्वां नियोक्ष्यामहे विष्णों लोकानां हितकाम्या।/तत्र त्वं मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टम्।
अवध्यं देवतैविष्णो समरे जहि रावणम्।।'

अर्थात् हे प्रभु विष्णु! लोकहित की कामना से हम आपको इस काम में लगाना चाहते हैं। आप मनुष्य रुप में अवतार लेकर बढे हुए लोककंटक रुप और देवताओं से न मारे जा सकने वाले रावण का युध्द में संहार कीजिए। इसिलिए गुरु विश्वामित्र ने भी ताड़का, मारिच, सुबाहुं आदि राक्षसों के संहार के लिए राम को ही चुना। इसीलिए गुरु विश्वामित्र तथा महर्षिओं ने विभिन्न दिव्यास्त्र दिए। महर्षि नारद ने भी महर्षि वाल्मीकि के आगे राम नाम की महिमा गायी और वाल्मीकि जब राम-नाम मंत्र से जो अनुभूति हुई, वहीं बात जनकल्याण के लिए ब्रह्मा के कहने पर महर्षि वाल्मीकि ने रामायण मे लिखा।

'वाल्मीकि रामायण' में 'राम' पितृभक्त, भ्रातुप्रेम, पत्नीव्रत धर्म, आज्ञापालन करने वाला आदर्श पुत्र, जीवों का उध्धार करने वाला, आदर्श राजा, परमात्मा का रुप, राक्षसों का संहारक, सर्व-व्यापि राम, गुरु की आज्ञा का पालनकर्ता, गुरु से दिव्यास्त्र पानेवाला, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, अयोध्या के सूर्यवंशी/ रघुवंशी राजा दशरथ और कौशल्या का जयेष्ठ पुत्र है।

सर्वव्यापी राम : 'राम' शब्द का अर्थ है, सकल व्रह्मांड मे निहित या रमा हुआ तत्व यानी चराचर में विराजमान स्वयं ब्रह्म। जबकि संत तुलसीदास का 'राम' शब्द से अभिप्राय उस परमात्मा से है जो समस्त जड-चेतन विश्व में रमा हुआ या सर्व-व्यापी है। वे हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि आदि पुरुश या परम प्रभु राम ही विश्व में व्याप्त हैं। वे कहते हैं :

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना।
यह कछु नहीं प्रभु कई अधिकाई।
बिस्वरुप व्यापक रघुराई।

यह समस्त विश्व जिसमें राम या परमात्मा समाया हुआ है, राम का ही रुप हैं। इसलिए तुलसी राम को 'व्यापक' (जो समाया हुआ हैं) और 'व्याप्य' (जिसमें व समाया हुआ हैं) -दोंनो ही कहते हैं। जो सभी गुणों का भंडार है, जो अलख, अविनाशी, आनंदमय और निर्गुण राम का कभी नाश नहीं होता। निर्गुणधारा के संतों की वाणी में भी इस शब्द का विस्तृत प्रयोग हुआ है। नामदेव, कबीर, रविदास, गुरु नानक आदि पूर्ण सन्तों की वाणी में सैकड़ों बार 'राम' शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस तरह स्वाभाविक ही मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि 'राम' शब्द का वास्तविक संकेत किस ओर हैं और राम का वास्तविक स्वरूप क्या है? मीरा के भजनों में 'राम' शब्द का प्रयोग किया है, तो गुजराती कवि नरसिंह महेता के पदों मे भी राम नाम की महिमा है। तो संत कबीर ने 'राम' शब्द के विभिन्न प्रचलित अर्थो को इस प्रकार स्पष्ट

किया है : 'जग में चारों राम हैं, तीन राम व्योहार।/चौथा राम निज सार है, ताका करो विचार।।
एक राम दशरथ घर डौलै, कौन राम घट-घट में बोलै।/एक राम का सकल पसारा, एक राम तिरगुनते न्यारा।।'

आप समझाते हैं कि लोग राम शब्द का प्रयोग प्रायः अलग-अलग अर्थो में करते हैं। कुछ लोग राम शब्द को अयोध्या नरेश दशरथ का सुपुत्र समझते हैं। कुछ लोग घट-घट में बैठे मन को राम कहते हैं। कुछ लोग समस्त सृष्टि के प्रसार को चलाने वाले ब्रह्म को राम कहते है, किन्तु सन्तों का राम से अभिप्राय निर्गुण, निराकार प्रभु से हैं। लेकिन निर्गुण, निराकार प्रभु को प्राप्त करने के लिए एक ही मंत्र है-'राम' नाम का स्मरण। कई जन्मों के अच्छे कर्मों से मिला यह मनुष्य जन्म सार्थक करना है, जीते भी परमात्मा की प्राप्ति करनी है, तो एक ही उपाय है- राम नाम का स्मरण, राम की भक्ति। तभी तो वालिया लुटेरा भी (रत्नाकर) 'राम' नाम के सुमिरन से महर्षि वाल्मीकि बने ओर नाम सुमिरन से जो अनुभूति हुई वही 'रामायण' ग्रन्थ में आपने वर्णन किया।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम : श्रीराम की प्रतिष्ठा मर्यादा पुरुषोत्तम के रुप में हैं। श्रीराम ने मर्यादा के पालन के लिए राज्य, मित्र, माता-पिता, यहां तक की पत्नी का भी साथ छोड़ा। इनका परिवार आदर्श भारतीय परिवार का प्रतिनिधित्व करता हैं। राम रघुकुल में जन्मे थे, जिसकी परम्परा 'रघुकुल रीति सदा चलि आई प्राण जाई पर वचन न जाई' की थी।

राम के पिता दशरथ ने उनकी तीसरी पत्नी कैकेयी को कोई भी दो इच्छाओं को पूरा करने का वचन दिया था। तो कैकेयी ने दासी मंथरा के बहकावे में आकर राजा दशरथ से वरदान के रुप में -अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजसिंहासन और रामको चौदह वर्ष का वनवास मांगा। राम ने पिता की आज्ञा का पालन किया और अपनी पत्नी संग वनवास जाने के लिए तैयार हो गये। और लक्ष्मण भी भाई की सेवा करने के लिए उनके संग ही गये। लेकिन जब भरत ने यह बात जानी तो, माता का आदेश न मानकर राम को बुलाने के लिए गये ओर जब राम ने इन्कार किया तो राम की चरण पादुका ले आया और उसे उँचे आसन पर रखकर राजकाज किया। और राम का वनवास पूरा होने पर भरत ने राज्य भाई राम को सौंपा। राम न्यायप्रिय थे। उन्होंने बहुत अच्छा शासन किया, इसलिए लोग आज भी अच्छे षासन कों रामराज्य की उपमा देते हैं।

आदर्श भाई : हिन्दू संस्कृति के अनुसार भाईयों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। इसकी शिक्षा हमें महर्षि वाल्मीकि ने राम के भातृ स्नेह से अभिव्यक्त किया हैं। राम तो अपने सभी भाईयों से प्रेम करता है, लेकिन लक्षण के प्रति उनका विशेष प्रेम हैं। परंतु भरत के प्रति भी राम का प्रेम कम नहीं हैं। भरत के बारे में राम सुग्रीव से कहता है-'न सर्वे भ्रातरस्तात भवन्ति भरतोपसाः।'

राम को अपने सभी भाई अपने प्राणो से प्रिय है। तभी तो लक्ष्मण जब मुर्छित हो जाता हैं, तो राम सामान्य पुरुप की तरह विलाप करते हैं। नंदीग्राम में राम और भरत का मिलन अत्यंत हृदय स्पर्शी है। उस समय आकाश मे विचरण करने वाले देव, गंधर्व, सिध्दों और महर्षिओं ने रामचंद्रजी की स्तुति करते हैः

'श्री रामचंद्र कृपालु भजमन, हरण भव भय दारुणं।/नवकंज लोचन कंजमुख, करकंज पदकंजारुणमू।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील नीरद सुंदरमू।/पटपीत मानहु तडित रुचिशुचि, नौमि जनकसुतावरमू।।'

राम की मातृभक्तिः वाल्मीकि रामायण में राम की मातृभक्ति बेजोड़ हैं। महर्षि वाल्मीकि ने राम का अपनी मां कौसल्या के प्रति विशिष्ट भक्तिभाव व्यक्त किया हैं। राम अपने राज्याभिषेक की सूचना सर्वप्रथम अपनी मां कौशल्या को ही देते हैं तथा राज्याभिषेक के स्थगित हो जाने का समाचार भी सबसे पहले मां को ही देते हैं। माता कोशल्या के दुःखी होकर उसके साथ आने की बात करती हैं, तब राम मां से कहते हैंः-

'व्रतोपवासनिरता वा नारी परमोत्तमा।
भर्तार नानुवर्तेत सा च पापगतिर्भवेत्।।'

अर्थात् व्रत और उपवास करके नियम में रहने वाली उत्तम स्त्री भी अगर पति के अनुकूल नहीं रहती, तो उनकी गिनती पापियों में होती हैं। इस प्रकार मां को अपने कर्तव्य पालन, अपने धर्म का पालन करने की बात कहता हैं। वनवास काल में भी माता कौशल्या के लिए चिन्तित रहते हैं।

राम की मातृभक्ति केवल अपनी मां कौशल्या तक ही सीमित नहीं है बल्कि अपनी अपनी विमाताओं के प्रति भी अत्यधिक विनम्र हैं। माता कैकेयी की जिद्द के कारण राजा दशरथ

की मृत्यु हुई और भरत ने ऐसे कार्य के लिए अपनी मां को माफ नहीं किया और न हीं राज्य स्वीकार किया बल्कि मां को अपना कर्तव्य याद दिलाया। अतः मां कौशल्या राम से माफी मांगती हैं। लेकिन राम तो राम हैं, बड़े-बड़े पापीयों का उध्धार किया है, तो यह तो उसकी मां हैं। मां कैकेयी के लिए किसी भी प्रकार की कड़वाहट उसके मुख पर नहीं आती है क्योंकि राम अपनी मां का आदर करते हैं।

राक्षसों का संहारक/वीर योध्दाः प्रभु राम ने सबसे पहले ताडका का संहार किया, जिससे देवता प्रसन्न हुए ओर कहा-प्रजापति कुशाश्व के जो अस्त्रशस्त्र आपको प्राप्त हुए है, वह रामचंद्र को देना, क्योंकि देवताओं का बहुत बड़ा कार्य राम ने किया है। ताडका के वध से पूरा वन निर्भय हुआ। छठ्ठे दिन मानवास्त्र से मारिच और आग्नेयास्त्र से सुबाहु का वध किया और निर्विघ्न यज्ञ पूर्ण हुआ। जिससे ऋषि मुनियों ने रामको आर्शिवाद दिए। गुरु विश्वामित्र प्रसन्न हूए ओर कहा कि आज सिध्धाश्रम का नाम सार्थक सिध्ध हुआ क्योंकि सिध्धाश्रम मे विष्णु भगवान ने तप करके वामन स्वरुप धारण किया ओर उसी विष्णु के अवतार रामने सिध्धाश्रम मे आकर मुनियों और यज्ञ की रक्षा की। परमात्मा विष्णु ने देव कार्य के लिए ही मनुष्य अवतार मे प्रभु रामचन्द्र ने जन्म लिया।

इतना ही नहीं युवावस्था में अकेले ही खर-दूषण, त्रिशिरा आदि चोदह-हजार राक्षसों का संहार किया क्योंकि प्रभु राम का जन्म राक्षसों के संहार के लिए ही हुआ था। गीता मे लिखा हैं- 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत/अभ्युत्थानमधर्मस्थ तदात्मानं सृजाम्यहम्।।'

बात एकदम स्पष्ट है-जब-जब अधर्म की प्रधानता तथा धर्म का लोप होने लगता है, तब-तब वे अवतार लेकर भक्तों का उध्दार करने, दुष्टों का विनाश करने तथा धर्म की फिर से स्थापना करने के लिए हर युग में धरती पर जनकल्याण के लिए जन्म लेते है। त्रेतायुग मे परमात्मा का रुप विष्णु के अवतार राम ने ऐसे राक्षसों के संहार के लिए जन्म लिया। विराध वध तथा बन्ध वध उनके उत्कृष्ट पराक्रम का उदाहरण हैं। लंकापति रावण और कुम्भकर्ण का वध करके अद्वितीय पराक्रमी होने का प्रमाण दिया है।

गुरु से दिव्यास्त्र पाने वालाः रामायण मे राम का अनेक ऋषि मुनियों से मिलना हुआ और हरेक ऋषि मुनि ने राम को आध्यात्मिक ज्ञान और अस्त्रशस्त्र दिये। राम ने गुरु वशिष्ठ से शिक्षादीक्षा ग्रहण की ओर आपसे आध्यात्मिक ज्ञान भी अर्जित कीया। और गुरु विश्वामित्र राम के पराक्रम से परिचित थे, इसलिए ताड़का, मारिच, सुबाहु जैसे राक्षसों के संहार के लिए राजा दशरथ से मांगते है। लेकिन राम पिता और गुरु की आज्ञा लेकर गुरु विश्वामित्र के साथ चलने के लिए तैयार हो जाता है। तब गुरु विश्वामित्र सबसे पहले राम और लक्ष्मण को बला तथा अतिबला नामक दो विध्या देते है ताकी राम ओर पराक्रमी, कुशल, ज्ञानी, बुध्दिमान, तर्क और सद्भाग्य में उत्तम पद प्राप्त करे। इस विध्या से भूख-प्यास नहीं लगती, कभी थकान नहीं लगती। यह विध्या गुरु विश्वामित्र ने तपस्या करके ब्रह्मदेव से पाया था, जो अब गुरु विश्वामित्र राम को देते है।

इतना ही नहीं दंडचक्र, धर्मचक्र, कालचक्र, विष्णु चक्र, इन्द्र का वज्रास्त्र, महादेव का शूलवतास्त्र, ब्रह्मा का ब्रह्मशर, मोदकी और शिखरी नामक गदाएँ, सूर्य का तेज-प्रभ अस्त्र, सोम का शिशिर नामक अस्त्र, मनु का शीतेषु नामक अस्त्र भी गुरु विश्वामित्र राम देते है। इतना ही नही उसका संधान (चलाना) करने की विधि भी सिखाते है। इसप्रकार विभिन्न देवो से प्राप्त दिव्य अस्त्र रामचंद्र को दिये।

यज्ञ पूरा होने के बाद गुरु विश्वामित्र दोनों भाईयों को मिथिलापुरी ले गये, वहां पर राम धनुष भंग करते है, धनुष की टंकार सुनकर गुरु परशुराम भी वहां पहुंच जाते है। लेकिन जब प्रभु राम के वास्तविक स्वरूप को जाना, तो माफी मांगी और अपना वैष्णव धनुष राम को देकर महेन्द्र पर्वत पर चले जाते हैं। वन-यात्रा के दौरान भरद्वाज ऋषि से मुलाकात होती है, ऋषि अत्रि के आश्रम पर कुछ समय निवास करके विभिन्न आर्शीवाद पाते है और माता सीता को सती अनसूया से दिव्य गहने प्राप्त होते है। राम जब दण्डकारण्य में प्रवेश करने पर वहां के आश्रम में रहने वाले ऋषिगण राम का स्वागत करते हैं यही पर राम विराध नामक राक्षस का वध करते हैं। इसके अनन्तर राम शरभंग, सुतीक्ष्ण तथा अगस्त्य आदि महर्षियों के आश्रम मे जाते हैं। अगस्त्य ऋषि

राम को विष्णु-धनुष प्रदान करते हैं। पंचवटी निवास स्थान पर शुर्पणखा का अपमान होने पर राक्षस सेनापति खर चौदह हजार राक्षसों सहित राम से युध्द करते है। और राम दूषण, त्रिशिरा एवं खर सहित समस्त राक्षस सेना का संहार करते है। इस प्रकार देवो द्वारा दिए गये दिव्य अस्त्रशस्त्र का प्रयोग राक्षसों के संहार के लिए उपयोग करता हैं।

जीवों का उध्दारकः प्रभु श्रीराम जीवों का उध्धार करने वाले परमात्मा का रुप है। आपने गौतम मुनि से श्रापित अहल्या का उध्धार किया तो, गौतम मुनि द्वारा श्रापित इन्द्र को भी श्राप मुक्त किया। राम भक्त शबरी को भी दर्शन देकर मुक्ति दिलाई। तो जटायु ओर तारा का भी उध्धार किया। इस प्रकार आदिकवि वाल्मीकि ने मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के संबंध में लिखा हैं कि गंभीरता में उदधि के समान और धैर्य में हिमालय के समान हैं। राम के चरित्र में पग -पग पर मर्यादा त्याग, प्रेम और लोकव्यवहार के दर्शन होते हैं। रामने साक्षात् परमात्मा होकर भी मानव जाति को मानवता का संदेश दिया। उनका चरित्र उत्तम हैं। इसलिए तो भगवान राम के चरित्र का गहरा प्रभाव हैं और युगों-युगों तक रहेगा।

संदर्भ सूची :-

१-आदिकवि श्रीवाल्मीकी रचित श्री वाल्मीकि रामायण-श्री नरेन्द्र कुमार(गुजराती अनुवाद) -पृष्ठ- 25,29
2– ‘‘ ‘‘ - पृष्ठ-160
3– ‘‘ ‘‘ - पृष्ठ-871
4-रामचरित मानस तथा उत्तररामचरित का तुलनात्मक विवेचन-डा.श्रध्दा शुक्ल- पृष्ठ : 3, 32, 33, 70, 73
5-रामचरितमानस का संदेश -एस.एम.प्रसाद- पृष्ठ : 97, 98

ऐसा देश है मेरा

तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहे न रहे!!

गणतंत्र दिवस हमारे देश का वो स्वर्णिम अवसर है, जिस पल के लिए, हमारे भारत ने वर्षों प्रतीक्षा की, फिर कितनी बाधाओं को पार कर, हमारी सरकार ने, भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया! गणतंत्र दिवस राष्ट्रीय पर्व है, जो पूरे भारत में मानाया जाता है! इसी दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम(1935) को हटाकर, भारत का सविंधान लागू किया गया था! एक स्वतंत्र गणराज्य बनने, और देश में कानून राज स्थापित करने के लिए सविंधान को 26 नवम्बर 1949, भारतीय सविंधान सभा द्वारा, अपनाया गया, 26 जनवरी 1950, को इसे, एक लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया!

26 जनवरी को इसलिए चुना गया था, क्योंकि 1930, इसी दिन, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने (आई.एन.सी.) भारत को पूर्ण, स्वराज घोषित किया था! यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है! अन्य दो गांधी जयंती, और स्वत्रंता दिवस है!

वैसे तो हमारा देश, 15 अगस्त 1947 को ही अग्रेजो के चंगुल से मुक्त हो गया था! इसे आजादी का रूप देने मे तीन वर्ष लग गये, फिर 26 जनवरी 1950 को वो स्वर्णिम दिवस आया, जिसे आजादी का मूर्त रूप दिया गया!

हमारे देश की आजादी मे देश के सपूतों ने अपना सबकुछ बलिदान कर दिया, उन वीर सपूतों का ऋणी, इस देश का बच्चा बच्चा है जो आजादी से साँस ले रहा है!

गणतंत्र दिवस पर हम उन वीर देश भक्तों के बलिदान को याद करते है, जिनके बलिदान से आज हम सब आजादी से जी रहे है!

इस अवसर पर, हर भारतीय, अपने देश पर बलिदान, हर देशभक्त को श्रध्दांजलि अर्पित करता है, जो तन मन धन अर्पण कर गये, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति, राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं, स्कूल कालेजों, आदि कई, कार्यक्रम आयोजित किऐ जाते हैं!

26 जनवरी को राष्ट्रपति द्वारा लाल किले पर भारतीय ध्वज फहराया जाता है! दिल्ली को दुल्हन की तरह सजाया जाता है! ये राष्ट्रीय पर्व पूरा देश हर्षोल्लास से मनाता है!

ये मेरे वतन के लोगों को, जरा याद करो कुर्बानी की, लता दीदी की आवाज की स्वरलहरिया, पूरे देश में गूजंती है!

गणतंत्र दिवस, पर राष्ट्रगान के साथ सुबह का आगमन होता है, और समापन हर्षोल्लास के साथ ‘ऐसा देश है मेरा’ जय हिंद जय भारत

-श्रीमती रीमा महेंद्र ठाकुर,
सहित्य संपादक, झाबुआ मध्यप्रदेश

यज्ञ से स्वर्गिक आनंद

जो व्यक्ति दूसरे का 'मंगल-सम्पादन' कर रहा हैं, वह सबसे बड़ा 'धर्म का काम' सम्पादित कर रहा है। वह सबसे बड़ा 'धार्मिक' है। जो व्यक्ति दूसरे को पीड़ा पहुँचा रहा हैं, वह सबसे बड़ा 'पाप' का काम कर रहा हैं वह 'दुष्ट' हैं।

-डॉ० अशोक आर्य
कौशाम्बी, गाजियाबाद, उ०प्र०

जो व्यक्ति कृपण होता हैं, उसका समाज में बहिष्कार कर देना चाहिये ताकि उसमें भी दान की वृति पैदा की जा सके। उसके मस्तिष्क में इस बात को डालना आवश्यक हैं कि दान ही स्वर्ग का मार्ग हैं, आदान अथवा कृपणता से नरक का द्वार ही खुलता हैं।

यह याग्यीय वृति ही हैं जिससे स्वर्ग के द्वार खुल जाते हैं। इस बात को यजुर्वेद के प्रथम अध्याय का यह 26वॉ मन्त्र इस प्रकार स्पष्ट का रहा हैः-

अपारः पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासम् व्रज्म गच्छ गोष्ठानम् वर्षतु से द्यौर बधान देव सावितः परमस्यां पृथिव्यागवम् शतेन पाशर्योदस्मांद्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मास्तमतों मा मौक। अररो दिवम् मा पप्टो द्रपसास्ते द्यॉ मया स्कॅन व्रजम गच्छ गोष्ठानम् वर्षतू ते द्यौरबधान देव सावितः परमस्यां पृथिव्या शतेन पाशेर्योद स्मांद्वेष्टि यम् च वयम् द्विष्मतो मय मौक।।यजुर्वेद 1 |26।।

इस मन्त्र में दो बातों पर प्रकाश डाला गया हैः-

1) यज्ञ करते हुए आदमी क बहिष्कार करोः-इस मन्त्र के द्वारा परम पिता परमात्मा प्राणी मात्र को उपदेश करते हुए कहते हैं कि इस संसार के जितने भी यज्ञ हैं, वह सब के सब दान का ही परिणाम होते हैं। बिना दान के कोई यज्ञ सम्पन्न हो ही नहीं सकता। दान से ही यज्ञ सम्भव होता हैं। वास्तव में यज्ञ का अर्थ ही दान हैं। यज्ञ का अर्थ ही परोपकार हैं। हम यज्ञ में जो कुछ भी ड़ालते हैं, वह सब अपने हित के अतिरिक्त दूसरों का उपकार करने के लिए भी होता हैं तथा यज्ञ में ड़ाला पदार्थ अग्नि अपने पास न रख कर, इसे हजारों गुणा शक्ति देकर, हजारों गुणा बटा कर या यूं कहें कि इस में कुछ और जोड़ कर वायु मण्डल का दान कर देता हैं तथा फिर वायु इसे संसार के लोगों का उपकार करने के लिए, शुद्ध, पौष्टिक वायु के माध्यम से सब प्राणियों में बांट देता हैं, प्राणियों को दान कर देता हैं। इस सब से स्पष्ट होता हैं कि यज्ञीय व्यक्ति सदा दान की भावना से ओत प्रोत होता हैं, उस में जन कल्याण की भावना होती हैं। वह बांट कर खाना ही पसन्द करता हैं। दूसरों को अपने में ही देखता हैं।

मन्त्र के इस भाग के माध्यम से यह सन्देश दिया गया हैं कि दान शील व्यक्ति सदा यग्यीय होता हैं। यह स्वयं ही दान शील नहीं होता बल्कि यह दूसरों को भी दान कि भावना से ओत-प्रोत करता हैं। अदानी की क्रिपणता की भावना को, दो उसे दानशील बनाया जावे। इसके लिए उसे समझाया जावेगा कि दान का क्या महत्व हैं? दान क्यों करना चाहिये आदि। जब उसे यह सब समझ आ जावेगा तो वह भी यज्ञीय बनने के लिए दान करने को आगे आवेगा। हम सत्संग करते हुए सदा यह प्रार्थना करते हैं कि हम सुमनस्य बनें। इतना ही नहीं हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि हमारे सब व्यक्ति, सब लोग, सब परिजन, सब मित्र आदि भी दान करने वाले हों। अर्थववेद में भी कहा है कि "दानकामश्च नो भवतु" यह सूक्ति भी यह ही उपदेश कर रही है कि हमारे सम्पर्क के सब लोग दान की भावना वाले हो, यग्यीय हो। यह बात ही यजुर्वेद कह रहा है कि सब किसी के दबाव में नहीं बल्कि स्वेच्छा से दान देने वाले हो, दान में उत्साहित हों अर्थात बड़े उत्साह से दान देते हों, दिल खोल कर दान देते हों। इस प्रकार मन्र का यह खण्ड़ कहता हैं कि हम दानशील बनें तथा जो आदानी हैं, उन्हें भी हम दानशील बनाने का भी प्रयास करें।

प्रभु आगे उपदेश कर रहे हैं कि जो लोग दानशील नहीं हैं, जिन में

दान की किंचित भी भावना नहीं हैं। जो अति क्रिपण हैं, कंजूस हैं, दान देते हुए जिन के हृदय में कष्ट होता हैं, ऐसे जीव को प्रभु यग्य का अधिकार नहीं देते और कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति को कोई भी भद्र व्यक्ति किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में आमन्त्रित न करें तथा समाजिक रूप से उसका बहिष्कार करे। किसी भी रूप में उसे सामाजिक कार्यो में भाग लेने की अनुमति न दी जावे। यह बहिष्कार ही, जिससे वह अपने आप को अपमानित सा अनुभव करेगा तथा बाध्य होकर, इस अपमान से बचने के लिए वह अदान की आदत को छोड़ कर दान करने वाला बन जावेगा।

मन्त्र अपने उपदेश को आगे बटाते हुए कह रहा है कि इस प्रकार सामाजिक भय से जब वह सत्संग को स्वीकार करने को तैयार हो जाता हैं तो इस प्रकार से सत्संग के माध्यम से वेद की वाणियों का, वेद के उपदेशों का यह सत्संग स्थान बन जाता है तो इस प्रकार से सत्संग के माध्यम से वेद के उपदेशों का प्रचार होने लगता हैं। इस के साथ ही जब बहिष्कार का भय उस कंजूस के सामने आवे गा तो भयभीत हो कर वह सत्संग में भाग लेने के लिए अपने आप को दानशील बनाने का यत्न करेगा। इससे वेद वाणियों का, वेद के उपदेशों का विस्तार हो जावेगां यह सत्संग ही हैं, जहां वेद के उपदेशों का ग्यान मिसलता हैं। इस प्रकार हे जीव! यह सत्संग तेरे लिए ग्यान के प्रकाश की वर्षा करे।

इस प्रथम खण्ड़ के अन्त में जीव उप पिता से प्रार्थना करता है कि हे पिता! हमें ऐसा आशीर्वाद दें कि हम सत्संग से, वेद के उपदेशों से कभी विमुख न हों। सदा वेद्ग्यान के प्रकाश में ही रहें, इस की छत्रछाया में ही रहें। जो लोग क्रिपण हैं, प्रभु! उन्हें भी दानशील बनने के लिए प्रेरित करें तथा उन्हें भी यग्य में जाने का, सत्संग में भाग लेने का अधिकर दें। उन्हें ग्यान के इस उपदेश से दूर मत करें। यदि उन्हें इस उपदेश से दूर रखा गया तो वह अपनी क्रपणता को कैसे बुरा समझेंगे तथा इस से कैसे बचेंगे? इसलिए प्रभो उन्हें दानशील बनाने के लिए, उन्हें भी यज्ञीय बनाने के लिए, उन्हें भी सत्संग में जाने का अधिकारी बनावें।

2) मन्त्र अपने दूसरे भाग में उपदेश कर रहा हैं कि जो न देने वाला हैं, दान न करने वाला हैं ऐसा व्यक्ति स्वर्ग का अधिकारी न हो ऐसा व्यक्ति सखों का प्राप्त न करें, वह कभी सुखी न हो। स्पष्ट है कि अदानी को, क्रपण को, कंजूस को कभी स्वर्ग नहीं मिलता, वह कभी स्वर्ग का अधिकारी नहीं होता। ऐसा व्यक्ति कभी सुखी नहीं हो सकता। यह संसार उसके लिए नरक के समान होता हैं। दुःखों का घर होता हैं। कभी सुखी नहीं हो सकता। यज्ञ दान का पर्याप्य होता हैं, दान ही यज्ञ की चरम सीमा होती हैं। अर्थात् दान शील बनना ही यज्ञ की पूर्णता हैं। यज्ञ को दानरूप भी कहा जाता हैं। यज्ञ से हमारा लोक तो सुधरता ही हैं, इसके साथ ही साथ हमारा परलोक भी सुधर जाता हैं। यज्ञ के ही कारण हम इस लोक के सुखों को भी पाते हैं और परलोक के सुख भी मिलते हैं।

मन्त्र आगे उपदेश करते हुए कह रहा हैं कि दानशीनल व्यक्ति भोंगों में लिप्त नहीं होता, वह कभी भोगप्रवण नहीं होता। जब वह दान की भावना रखता हैं, वह अपना पूरा समय दूसरों की सहायता में, परोपकार के कार्यो में लगाते हैं। इस कारण उनके पास होकर बेकार के कार्यो के लिए, भोगों के कार्यो के लिए समय ही नहीं रहता। इसलिए वह कभी भोगों की ओर जा ही नहीं सकते। जब वह भोगों में लिप्त नहीं होते तो उनके शरीर की शक्ति, जिसे सोम कहते हैं, जो कुछ कणों का परिणाम होती हैं, उनके यह सोमकण कभी नष्ट नहीं होते। यह सोमकण उनके शरीर में सुरक्शित रहते हैं। यह सोम कण ही ग्यानाग्नि के लिए ईंधन का काम करते हैं। इस ग्यानाग्नि रूपि ईंधन से जो ग्यान की आग हमारे अन्दर जलती हैं, उस अग्नी से ग्यान रूपी जो सागर हमारे अन्दर टाटें मार रहा हैं, वह कभी भी नहीं सूख पाता क्योंकि इस अग्नि के साथ हमारे अन्दर जो सोमकण होते हैं, वह इस सरोवर को टण्ड़ रखते हैं। इसलिए हम इस बात को सदा स्मरण रखें, याद रखें और इस के प्रकाश में हम सदा देने वाले बने रहें, दानशील बने रहें।

मन्त्र कह रहा है कि तूं सदा दानशील बना रह। तेरी व्रति, तेरी आदत भोगव्रति की न हो, तूं भोगों में न फंस सके। तेरे अन्दर सुरक्शित यह सोमकण ग्यान से तेरे मस्तिष्क को, जिसे इस शरीर का द्युलोक

माना जाता हैं, सदा भरा रहे। इस मस्तिष्क को ज्ञान के जल से तब ही भरा हुआ रखा जा सकता हैं, जब हम इस जल को कभी सूखने न दें। इस जल में निरन्तर जल आता रहे। यदि जल का, यदि ज्ञान का प्रवाह रूक गया तो इसके सूखने में कुछ भी देर नहीं लगेगी। इसलिए इस प्रवाह को बनाये रखने के लिए हम सोम कणों को सुरक्षित रखें तथा इनकी सहायता से अपने ज्ञान को निरन्तर बटाते ही रहें। इस को बटाने की, इसे बनाये रखने की जो एक मात्र विधि, प्रभु ने बतायी हैं, वह हैं सत्संग। यह सत्संग ही हैं, जो इस तालाब को भरा हुआ रख सकता हैं। इसलिए तूं सदा सत्संग में भाग ले। सत्संग को प्राप्त हो। वेद की वाणियों का स्वाध्याय कर, वेद का प्रकाश प्राप्त कर, जो सत्संग से ही सम्भव हैं। वेद की वाणियों से जो ज्ञान मिलता हैं, जो विद्या मिलती हैं, इसके प्रकाश से ही हमारे अन्दर ग्यान की वर्षा होती हैं, ज्ञान का प्रकाश होता हैं।

मंत्र आगे उपदेश कर रहा हैं कि हे जीव! तू सदा यह प्रार्थना कर कि हे प्रभो! हमारे ऊपर यह जो अनेक प्रकार के बन्धन लगे हुए हैं, तूं हमें इन सब बन्धनों से मुक्त कर, सब पाश तोड़ दे। यथा द्वेष भावना के कारण जिसे हम अपना प्रिय स्वीकार नहीं करते, एसे दुष्ट को भी आप सत्संग से कभी वंचित न करना। कितनी ऊंची भावना, कितने ऊंचे विचार इस मन्त्र के माध्यम से हमें मिल रह हैं, कि वह प्रभु एसे दुष्टों को भी कभी सत्संग से वंचित न करे। यदि सत्संग से ही वंचित कर दिया गया तो वह कभी अपने में सुधार नहीं कर पावेगा। इसलिए उसे सुधरने का पूरा अवसर दिया जावे, सत्संग में भाग लेने की अनुमति दी जावे। इस में होने वाले उपदेशों को सुनने का उसे भी अधिकारी बनाया जावे। इन उपदेशों से उसे वंचित न करियेगा प्रभु। हम तो चाहते हैं कि हमारे शत्रु भी इस सत्संग के उपदेशों से लाभान्वित हों। ऐसा सौभाग्य उन्हें भी समान रूप से मिलता रहे। यदि इस प्रकार के अवसर उन्हें मिलेंगे तो इन अवसरों का लाभ उठाते हुए वह भी इन सत्संगों में बरसने वाले ग्यान के जल में स्नान करके निर्मल हो सकेंगे। जब वह इस सत्संग क उपदेश रूपी जल में स्नान कर निर्मल हो जावेंगे। जब वह हमारे मित्र बन हमारे साथ यग्य करने लगेंगे, इस के महत्व को समझेंगे तो उनमें भी दान की भावना जाग उठेगी तथा वह भी दानशील लोगों का अंग बन जावेंगे, दानशील बन जावेंगे।

बलात्कार

ज्येठ महीने की थी बात,
भीषण गर्मी की थी रात।
स्कूल हमारे बंद हुए थे,
थक के हम भी चूर हुए थे।
मानव रूपी भेड़िया आया,
उस वहसी को तरस ना आया।
मैं छोटी बच्ची लाचारी थी,
घर की प्यारी दुलारी थी।
उस अंधेरी रात मैं चीखी थी,
माँ बापू कहकर बिलखी थी।
उस भेड़ियों को तरस ना आया,
मैं बच्ची पर तरस ना आया।
मैं एक बच्ची दलित लाचारी,
लोगों के लिए अछूत थी।
मैं उस अंधेरी रात रोई
बिलखी चिखी थी।
उस मानव रूपी भेड़िए ने,
उस रात कहंर बरपाया था।
माँ माँ कहते कहते,
उस रात मुझे तड़पाया था।
उस काली अंधेरी रात में,
मेरे कोमल से जिस्म में।
दानव जैसे दांत गडाया था।
उसे ज्येठ की रात मुझे,
मानवता पे सरम आया था।
उस अंधेरी रात को चिखते हुए,
हाय माँ हाय पा कहके,
मैने कैसे रात बिताया था।
मै भी तुम्हारी बहन बेटी हूँ,
कुछ तो मुझपे तरस करो।
मैं एक दलित बेटी हूँ,
कुछ तो खुद पे शर्म करो।
दलित होने पे तुम अछूत मानते,
बलात्कार करते कुछ नही मानते।
ये कैसे इंसान हो तुम,
इंसान हो या हैवान हो तुम।

-राजेश 'बनारसीबाबू'
वाराणसी, उ.प्र.

जिंदगी को समय और परिस्थितियों के अनुसार ढालना जीवन जीने का मूल मंत्र

जिंदगी और समय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक-जिंदगी, समय का सदा सदुपयोग और समय, जिंदगी की कीमत सिखाता है।

-किशन भावनानी
गोंदिया महाराष्ट्र

भारत आदि जुगाद काल से ही एक धार्मिक, आध्यात्मिक, परोपकारी देष रहा है। भारत की मिट्टी में ही ये गुण समाए हुए हैं, यह हम सब जानते हैं। साथियों मनुष्य जीवन का मिलना आध्यात्मिक में भाग्यशाली माना जाता है, क्योंकि उसमें सोचने समझने की शक्ति याने बुद्धिमता अन्य प्राणियों के जीवन से कई गुना अधिक होती है। परंतु बहुत सी ऐसी छोटी-छोटी बातें होती है जिन्हें हम नजरअंदाज कर देते हैं कि यह हमारे लिए मायने नहीं रखती। उसमें से दो महत्वपूर्ण बातें हैं, जिंदगी और समय का महत्व। साथियों बात अगर हम जिंदगी और समय की करें तो इसका हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व रहता है। जिंदगी का मतलब जीवन में जिस तरह हम जी रहे हैं और समय का मतलब जिन परिस्थितियों में हम जी रहे हैं। साथियों इस कोरोना काल के समय में हमने जैसी जिंदगी जिए वह हमें आजीवन याद रहेगी क्योंकि जिंदगी और समय ने हमें बहुत कुछ सिखाया और हमें इन दोनों कड़ियों को एक शिक्षक का दर्जा देना ही होगा। क्योंकि जिंदगी विपरीत समय मैं कैसे जीना और विपरीत समय कैसे होता है करोना कॉल की अभूतपूर्व विपरीत परिस्थितियों में यह करीब-करीब विश्व के हर मनुष्य की समझ में आ गया होगा और हम सबको इस विपरीत परिस्थितियों की जिंदगी और विपरीत समय को अपने जीवन में एक शिक्षक का दर्जा देना होगा और हम इन दोनों शिक्षक रूपी मंत्रों से सीखे कि विपरीत परिस्थितियों के अनुसार कैसे जीवन जीना है। साथियो समय और जिन्दगी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है जिन्दगी समय का सदुपयोग सिखाती है और समय हमें जिन्दगी की कीमत सिखाता है। किसी व्यक्ति के जीवन की ऊंचाई मापने के तीन मंत्र हृदय की मधुरता, उदारता और विनम्रता है। जो दिया रात भर रोशनी देता है लोग सुबह होते उसे भी बुझा देते हैं। जब से सृष्टि का निर्माण हुआ है तबसे समय का पहिया लगातार घूम रहा है। पृथ्वी के करोड़ों वर्शों के जीवन में समय से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं। समय को सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है क्योंकि एक बार जो समय बीत गया उसे वापस नहीं लाया जा सकता परंतु उससे एक सबक या शिक्षा जरूर ली जा सकती है। कोरोना कहल की परिस्थितियों में पिछले डेढ़ वर्ष से जिस प्रकार का जीवन हम सब ने जिए, बेशक परिस्थितियाँ अच्छी नहीं थी। ये लॉकडाऊन, कोरोना वायरस व आर्थिक मंदी ऊपर से अनिश्चितता का दौर कृपता नहीं कब तक चलेगा? ऐसे में हमारा उदास व चिन्तित होना स्वभाविक हैं। किन्तु दुःखी हो कर अवसाद में घिर जाने व नकरात्मक चिंतन से कुछ भी हासिल नही होगा उल्टे समस्याएं और बढ़ जाएँगी बल्कि हमें इनसे शिक्षा देनी चाहिए। अतः हमें अपने आप को खुश रखना होगा। हमें ये भली-भाँति समझना होगा कि सुख व दुःख दोनों का मिला जुला रूप ही जीवन हैं। यह हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हम किसे महत्व देते हैं यदि विपरीत परिस्थितयों में भी हम सकारात्मक रह पाएँ तो हमारा जीवन सफल व सही दिशा में चलेगा नतीजतन हम खुश रहेंगें। हम में से प्रत्येक व्यक्ति सुखी व खुश रहने की कामना करता है। कभी कोशिश कामयाब होती है कभी नही। अब तक लॉकडाऊन से हम सभी परिचित हो चुके हैं इसके द्वारा दिए गये विभिन्न रँग व उनके बदलते आयाम इस समय के सभी आयु वर्ग के लोंगों के लिये एक अतीत स्मरण बने रहेंगें। जैसे इसकी निरन्तरता बनी रही वैसे वैसे लोंगों की मानसिकता में भी बदलाव आया। उन्होंने परिस्थिति के आगे हथियार

डाल दिये और घरों में क़ैद हो कर रह गये। यह हमने जिंदगी और समय रूप शिक्षक से सीखे कि कैसे बंद रहकर भी जीवन की जिंदगी जी जा सकती है। जीवन संभावनाओं से पूर्ण है, यदि आप जीवन में कुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो सबसे पहले समय का महत्व सीखें, जिंदगी में अपनी प्राथमिक्ताएं निर्धारित करे तथा किसी भी काम को कल पर ना छोड़ें। आज का काम आज ही समाप्त करे क्योंकि समय का जितना अच्छा उपयोग करेंगे समय का मूल्य उतना ही बढ़ता जाएगा, जिसका प्रतिफल समय आपको अवश्य देगा। समय हमेशा आगे की ओर बढ़ता जाता है। हम सभी को जीवन में बहुत थोड़ा समय मिला है इसलिए हमें समय का सही उपयोग करना चाहिए उसी से सीखना चाहिए। क्योंकि अगर हम समय की कीमत नहीं समझेंगे तो जीवन की बेशकीमती दौलत से भी ज्यादा कीमती समय गँवा बैठेंगे और एक बार हमने जो समय गँवा दिया तो उसे चाह कर भी वापस नहीं ला सकते परंतु उससे जो हमने शिक्षा प्राप्त किए वह हमें काम आएगी। एक समृद्ध पारिस्थिति की तंत्र जीवन के लिए बहुत आवश्यक होता है। जहां कही भी जीवन हो, वहां एक स्वस्थ पारिस्थिति की तंत्र की आवश्यकता होती है, जो जीवन के विकास के अनुकुल हो। अतः उपरोक्त पूरे विवरण का अगर हम अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि जिंदगी और समय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक हैं, जिंदगी समय का सदा सदुपयोग और समय जिंदगी की कीमत सिखाता है। इसलिए जिंदगी को समय और परिस्थितियों के अनुसार ढालना जीवन जीने का मूल मंत्र है।

जिंदगी अनुभव का भाव है सीखते चलें।
समय उस भाव का दाव है सिखाते चलें।।
आओ जिंदगी को गाते चले।
समय से सीखते पल बिताते चलें।।
क्या लाए थे क्या ले जाएंगे।
सीखने के भेद सबको लुटाते चले।।
आओ समय के साथ चलते चलें।
जिंदगी का सफर यूं ही काटते चलें।।

(लेखक-कर विशेषज्ञ, साहित्यकार, कानूनी लेखक, चिंतक, कवि है।)

कानून

कानून।
यह नियम संहिता का सुन्दर रूप है,
मनुष्य के आचरण का यह प्रारूप है।
विधायिका द्वारा स्वीकृत व लागू,
अपूर्व मूर्त रूप है।
इसका अनुपालन यहां,
सदा अनिवार्य है,
दण्ड नहीं तो यहां,
निश्चित अपरिहार्य है।
यह अधिकारों को लेकर,
खुशियां दे जाता है।
जिम्मेदारियों का विस्तार कर,
कानून कहलाता है।
कानून का यहां,
भिन्न-भिन्न प्रकार है।
कहीं कानून आकार तो कहीं,
प्राकृतिक उपचार है।
श्रम सम्पत्ति संवैधानिक भी हैं,
इनके भिन्न-भिन्न रूप यहां।
सही और ग़लत का दिखता,
सर्वत्र प्रारूप जहां।
कानून स्वच्छ निर्मल विचार है,
समाजिक संसार का,
यही वैधानिक उपचार है।

-डॉ० अशोक कुमार शर्मा,
पटना, बिहार।

हार!

बेहतर होने का अनुभव देती हैं,
यह तो सीरीफ एक परिस्थिति है,
सफलता का सबसे बड़ा रास्ता होती है,
कुछ देर की अतिथि है!

यह विजय होने का मजा देती है,
संभलने का जुनून सिखाती है,
जीत की दहाड़ होती है,
जीवन में सबसे बड़ी चुनौती है!

इसे भी सहना, सीखना है जरूरी,
क्योंकि जीत की होती है, थोड़ी सी दूरी,
इससे हो जाता है, हमारा दिन थोड़ा बुरा,
पर इसके बिना जीतने का, एहसास
है अधूरा!

कोई बड़े से बड़ा वार करें,
अगर बार-बार हमें हार मिले,
और जीतने की कोशिश दमदार रहे,
तो जान लो, जीत उसी के बाद
शानदार है!!

-डॉ. माध्वी बोरसे, राजस्थान,
रावतभाटा

कहानी

नाबालिग

–देवेन्द्र कुमार मिश्रा
चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा, म०प्र०

20 वर्ष हो गये केस चलते हुए लेकिन कोई नतीजा नहीं निकल रहा था। 5 एकड़ खेती के लिए, मानसिंह और समरसिंह दोनों चचेरे भाई थे दोनों में जमीन का केस चल रहा था। ये केस जब शुरू हुआ तब दोनों का विवाह भी नही हुआ था। अब तो उनके बच्चे भी स्कूल जाने लगे थे। इन बीस वर्षों में दोनों परिवारों में वैमनस्य भी बढ़ता रहा। समरसिंह और मानसिंह दोनों ही अपनी खेती–बाड़ी बेचकर शहर में आकर व्यवसाय करने लगे थे।

मानसिंह की एक बेटी थी। 17 वर्ष के आस–पास। वह स्कूल में पढ़ती थी। समरसिंह का एक लड़का था रतन सिंह। उसकी उम्र भी 16 के आस–पास होगी रतनसिंह बहुत शरारती लड़का था। आये दिन मोहल्ले में किसी न किसी के साथ मार–पीट करता रहता।

पेशी से थककर आये समरसिंह ने घर आकर एक गिलास पानी मांगा तो पानी के साथ उनकी पत्नी सुभद्रा ने रतनसिंह के करतूतों की पोटरी भी खोल दी।

“आज फिर लड़–झगड़कर आया है रतन। मोहल्ले भर के लोग शिकायतें लेकर आते हैं। मैं तो थक गई हूँ इसकी गुंडागिर्दी से। कहीं ऐसा न हो कि किसी दिन किसी की हत्या कर बैठे और हमें जिन्दगी भर कोर्ट–कचहरी और जेल के चक्कर लगाने पड़े।”

“ये लड़का पढ़ता–लिखता नहीं है।”

“नहीं, एक क्लास में दो साल से फेल हो रहा है। पूछो तो पलटवार जवाब देता है। क्या होगा?'' पत्नी सुभद्रा ने चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा।

“ठीक है। मैं बात करता हूँ उससे। यदि नहीं पढ़ना–लिखना तो काम धंधा संभाले हमारा।”

“काम धंधा क्या संभालेगा। उसके भरोसे दुकानदारी मत छोड़ देना। नहीं तो वो भी बर्बाद कर देगा।”

“आये तो मेरे कमरे में भेज देना।” कहकर संग्रामसिंह अपने कमरे में चले गये।

मानसिंह की बेटी खुशबू को शहर की जो हवा लगी तो वह सबकुछ भूलकर पाश्चात्य के रंग में रंग गई। मान सिंह को अपनी बेटी की करतूतों की खबर तो थी लेकिन जब एक दिन उन्होंने अपने ही घर में बेटी के कमरे में किसी नौजवान का आपत्तिजनक स्थिति में देखा तो उनका खून खौल गया। उन्होंने अपने ड्रांइगरूम की शोभा बढ़ाने वाली दोनाली बन्दूक निकाली और बेटी के कमरे में चीखकर घुस गये। पति की आवाज सुनकर पत्नी सुनन्दा तेजी से दौड़ी बेटी ने अपने कपड़े संभाले। उसका दोस्त भाग निकला जान बचाकर वस्त्रहीन अवस्था में।

“बदमाश, खानदान की नाक कटा रही है। शर्म नहीं आती। पढ़ने–लिखने की उम्र में ऐय्याशी करते हुए।'' उन्होंने बेटी पर बन्दूक तान ली। तभी उनकी पत्नी ने आकर उन्हें रोका ‘‘क्या कर रहे है? अपनी ही बेटी की जान लेगें क्या?”

“इसने काम ही ऐसा किया है। अपने ही घर में मुँह काला करवा रही है।” पत्नी सुनन्दा ने पति के हाथ से बन्दूक लेकर एक तरफ हुए कहा–“जवान बेटी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करते। मैं देखती हूँ उसे। आप अपने कमरे में जाइये।”

मानसिंह गुस्से में अपने कमरे में चले गये। बेटी ने माफी मांगने की बजाय चीखकर कहा–“कोई मैनर्स है कि नहीं। बिना आवाज दिये, घंटी बजाय सीधे कमरें में घुसे चल आये।” माँ सुन्नदा ने आकर बेटी को खींचकर चांटा मारते हुए कहा–“शर्म–वर्म बची है या सब बेच खाई।” माँ के थप्पड़ से आहत होकर बेटी ने आत्म–हत्या की धमकी दी। माँ को चुप होना पड़ा।

मानसिंह से अपनी पत्नी से खाना खाते वक्त कहा–“ये सिखाया अपनी बेटी को”

“मैं क्या करूँ? मेरा कंहा सुनती है। सारी बुरी आदते लगी हुई है। न जाने किसके साथ घूमती–फिरती है। स्कूल, ट्यूशन जाने के बहाने। अब मैं हर वक्त न तो उसके साथ रह सकती हूँ। न उसका पीछा कर सकती हूँ शराब, सिगरेट सारे शौक पाल रखे हैं। आप उसके पिता है। आपका

भी कुछ फर्ज बनता है।"

मानसिंह ने गुस्से का दबाने की कोशिश करते हुए कहा-"क्या करूँ मैं? काम धंधे से फुर्सत नहीं मिलती। मिलती है तो कोर्ट कचहरी में समय लग जाता है। इस लड़की के लक्षण ठीक नहीं है। कोई अच्छा सा लड़का देखकर शादी करो और पीछा छुटाओं इससे।"

"शादी उसकी मर्जी के बिना तो कर नहीं सकते। फिर अभी वह नाबालिग है। ऐसे में शादी करना गैरकानूनी होगा।"

"ये नाबालिग लड़कियों के लक्षण है। काम तो पूरे वयस्कों वाले कर रही है। पता नहीं किसने कानून बना दिया।"

मानसिंह की बेटी खुशबू को शहर की जो हवा लगी तो वह सबकुछ भूलकर पाश्चात्य के रंग में रंग गई। मान सिंह को अपनी बेटी की करतूतों की खबर तो थी लेकिन जब एक दिन उन्होंने अपने ही घर में बेटी के कमरे में किसी नौजवान का आपत्तिजनक स्थिति में देखा तो उनका खून खौल गया।

मानसिंह और समरसिंह दोनों की एक ही बाजार में कपड़े की दुकानें थी। दोनों में खूब व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा चलती थी। 5 एकड़ की जमीन वाला केस दोनों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन चुका था। दुकानदारी को लेकर भी उनमें अक्सर झड़पे होती रहती थी। घर में मानसिंह बेटी से परेशन थे और समरसिंह अपने बेटे से। मानसिंह की बेटी बिना लगाम के घोड़े की तरह बेकाबू हो चुकी थी। यही हाल रतनसिंह का भी था।

एक दिन लड़ाई-झगड़ा करके आये शराब पिये बेटे पर पिता ने हाथ उठाया तो बेटे ने हाथ पकड़ते हुए कहा "अब मैं बच्चा नहीं रहा। बड़ा हो गया हूँ। बात-बात पर हाथ उठाने की जरूरत नहीं,'' समरसिह का खून खौल उठा। उन्होंने गुस्से में कहा-"निकल जा मेरे घर से"

बेटे ने भी नशे और गुस्से में कहा-"मुझे रहना भी नहीं हैं ऐसे घर में जहाँ बात-बात पर पिटा रहूं।" माँ रोकती रह गई। बेटा माँ का हाथ झटककर निकल गया। ऐसा कई बार हुआ पहले भी हो चुका था। पिता को मालूम था भूख लगेगी तो वापिस आ जायेगा उन्होंने पत्नी को समझा दिया। "चिन्ता मन करो। कहीं-नहीं जायेंगा। आ जायेगा।"

समरसिंह की चिन्ता ये थी क्या होगा उनके बेटे के भविष्य का। न पढ़ाई लिखाई। न काम धंधे में मन लगता है। मारपीट, शराब, जुआ बस यही करता रहता है। कभी किसी ने गुस्से में जान से मार डाला तो उनका तो बेटा गया। दो दिन बाद समरसिंह घर आया तो उन्होंने पूछा-

"आखिर ऐसा कब तक चलेगा। करना क्या चाहते हो।"

"मैं राजनीति में जाना चाहता हूँ।" रतनसिहं ने कहा तो पिता चौक गये।

"राजनीति में जाना चाहते हो तो फिर ये झगड़े मार-पीट क्यों?"

"राजनीति के लिए जमीन तैयार कर रहा हूँ।" बेटे ने बेखौफ कहा।

"यदि किसी दिन तुम्हें कुछ हो गया तो ''पिता ने चिन्ता व्यक्त की।"

"मुझे कुछ नहीं होगा। होगा तो देखा जायेगा। राजनीति में जाने के लिए इतनी रिस्क तो लेनी पड़ती है।"

"लेकिन लड़ाई-झगड़े से राजनीति का क्या लेना-देना।" पिता ने पूछा।

"आजकल गुंड़े मवाली, जेल गये लोगों की ही राजनीति में पूछ-परख होती है पिताजी'' बेटे के दुस्साहस भरे उत्तर को सुनकर उन्होंने घबराकर पूछा- "जेल जाने से ड़र नहीं लगता।"

"ड़र कैसा पिताजी। जेल तो राजनीति की प्रथम पाठशाला है। ये तो सौभाग्य की बात है। पिता ने बहुत समझाया लेकिन बेटा न समझा। उसकी हरकतों में बढ़ोत्तरी होती रही।

आमतौर पर इस शहर मे शुक्रवार को व्यवसाय बन्द रहता है। समरसिंह घर पर बैठे टी०वी० पर समाचार देख रहे थे। नाबालिग की हत्या और बलात्कार के आरोप में मात्र 3 वर्ष की सजा।

खबर देखकर वे कुछ सोचने लगे। उन्हें वकील की बात याद आ गई। "समरसिंह दीवाने मामले बहुत लम्बे चलते हैं। एक समाधान ये भी है कि मानसिंह मर जाये तो जमीन एक तरफा तुम्हारी होगी। पता नहीं ये बात वकील ने बार-बार फैसले की तारीख पूछने पर बचने के लिए चिढ़कर कहीं थी या.....ये तो वकील ही जाने। लेकिन उनके दिमाग

में खिचड़ी पकने लगी।”

मानसिंह भी दुकान बन्द होने के कारण वकील के घर गया हुआ था। वकील साहब दूसरे क्लाइन्ट से बात कर रहे थे। उन्होंने भानसिंह को बैठने को कहा। मानसिंह कुछ दूर पर रखी बेंच पर बैठ गया। वकील साहब अपने क्लाइन्ट को समझा रहे थे।

“नाबालिग लड़की किसी पर यौन शोषण का आरोप भी लगा दे तो उसका जेल जाना तय है। बाकी जाँच पड़ताल बाद में होती है। तुम नहीं बच सकते। आरोप लगा है। जेल तो जाना ही होगा। जमानत करवा सकता हूँ बाद में ले देकर मामला सैटल कर लेना।”

मानसिंह ने ये सुना तो उसके दिमाग की ट्यूब लाइट भी जलने लगी।उसनें जरूरी काम है कहकर वहाँ से निकल गया। अपनी पत्नी से कहा-“खुशबू तो वैसे ही बिगड़ी हुई है यदि ये रिपोर्ट कर दे समरसिंह के खिलाफ तो वर्षो की झंझट खत्म हो जाये।”

पति की बात सुनकर पहले तो पत्नी को गुस्सा आ गया। लेकिन पति के बार-बार समझाने से वह समझ गई। रोज-रोज के व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा से लेकर 5 एकड़ जमीन का चलता केस उनके लिए सिरदर्द के साथ-साथ इज्जत का प्रश्न भी बन गया था। फिर करना ही क्या था समरसिंह को घर में अकेला देख जाकर कुछ देर बैठकर वापिस आकर सीधे थाने में रिपोर्ट करना था। फिर पीड़ित लड़की का चेहरा भी नहीं दिखाया जाता।

माँ ने बेटी से कहा तो बिगडैल बेटी ने कहा-“ये तो मेरे बांये हाथ का काम है।’’

समरसिंह ने अपनी पत्नी से चर्चा की। “मानसिंह से रतनसिंह ही निपट सकता है।”

“वो कैसे?”

“उसे खत्म करके”

“ताकि बेटा सारा जीवन जेल में सड़ता रहे।”

“अरे पगली, जेल में क्यों सड़ता रहेगा। कानून नहीं जानती क्या? नाबालिग है। मुश्किल से दो-तीन साल रहेगा बाल-सुधार गृह में। हमारी टेंशन भी दूर हो जायेगी या तो हमेशा के लिए सुधर जायेगा या अच्छी तरह बिगड़कर राजनीति में चला जायेगा। ये रोज का डर लोगों की शिकायतें, बेटे को जान का खतरा। कोई हत्या न कर दे। सबसे मुक्त हो जायेगे हम। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन भी खत्म हो जायेगा। हमारी पाँच एकड़ जमीन भी वापिस मिल जायेगी।”

“लेकिन......तुम चिन्ता मत करो। मैं सब संभाल लूंगा। तुम सिर्फ बेटे को तैयार करो। पुलिस की झंझट से बचने के लिए तुम मायके हो आओ दो-चार दिन के लिए।” पत्नी ने सहमति जताई।

सुभद्रा ने अपने बेटे रतनसिंह को मानसिंह द्वारा हो रहे व्यवसाय में घाटे, जमीन के केस के बारे में बताया। बेटे ने क्रोध में आकर कहा-‘‘आप लोगों ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया।”

तभी समरसिंह ने आकर कहा-“कोई मार-पीट का काम होता तो बताते। बिना खत्म किये किस्सा खत्म नहीं होगा।’’

“तो खत्म कर देता हूँ। माँ-बाप के काम आया। यही बहुत है मेरे लिए।’’

“खत्म कर सकोगे।” पिता ने कहा।

“आपको कोई शक है।” बेटे ने कहा।

पिता ने बन्दूक हाथ में देते हुए कहा-“ये लो और खत्म कर दो। नाबालिग हो। दो या तीन साल बाल सुधार गृह में रहना पड़ेगा। मैं बड़े से बड़ा वकील करूंगा। चिन्ता मत करना।”

रतनसिंह ने माता-पिता के पैर छूकर आशीर्वाद लिया और चला गया। रतनसिंह मौके ताक में था। समरसिंह ने पत्नी को मायके भेज दिया था। वे घर में अकेले थे। तभी खुशबू आ धमकी। खुशबू को देखकर वे हैरान रह गये। खुशबू ने अपने कपड़े फाड़े। चीखी चिल्लाई। पूरा मोहल्ला इकट्ठा हो गया। खुशबू हांफते भागते सीधे थाने पहुंची।

रतनसिंह ने दुकान जाकर बन्दूक को मानसिंह के सीने से लगाते हुए ट्रेगर दबाया। धांय की आवाज के साथ एक जोरदार चीख निकली और मानसिंह की मौत हो गई। नाबालिग के साथ यौन शोषण के आरोप में समरसिंह जेल में थे।

वही उनका बेटा भी कत्ल के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। एक माह तक समरसिंह की खूब थू-थू हुई और अन्ततः उनकी जमानत हो गई। रतनसिंह पर कत्ल का मुकद्मा चला किन्तु अदालत ने उसे 2 वर्ष के लिए बाल सुधार गृह भिजवा दिया। पति की मौत के बाद सुनन्दा ने

सुभद्रा से सौदा किया।

“यदि अपने पति को नाबालिग के यौन शोषण के आरोप से बचाना चाहती हो तो पाँच एकड़ खेती मेरे नाम कर दो या उतनी रकम दे दो।” समरसिंह ने रूपयों का इन्तजाम करके पैसा सुनन्दा सिंह को दे दिया। सुनन्दा ने स्टाम्प पेपर पर लिखकर अपना हिस्सा नगद में मिलने पर जमीन का केस खत्म करवा दिया। 5 एकड़ जमीन की रकम 1 करोड़ रूपये जो दूसरे दिन बैंक में जमा होने थे उसनें अपनी माँ को चिन्ता न करने की सलाह भी दी और ये भी कि इस रकम पर उसका हक बनता है।आखिर उसी की यौन शोषण की रिपोर्ट के बदले ये रकम मिली थी। सुनन्दा अकेली रह गई। पति की हत्या हो चुकी थी। बेटी घर से एक करोड़ रूपया लेकर भाग चुकी थी।वे समझ नहीं पा रही थी कि उनके पति और पति के कहने पर चलने वाली पत्नी नाबालिग थे या उनकी बेटी। बेटी तो खैर कानूनन नाबालिग थी लेकिन वे तो बुढ़ापे की ओर जाते हुए भी नाबालिग थे। बाल सुधार गृह से एक दिन खबर आई कि आपसी मार–पीट में रतनसिंह के सिर पर पत्थर मारकर उसके नाबालिग साथियों ने हत्या कर दी। समरसिंह भी सोच रहे थे कि बेटा तो उम्र से नाबालिग था लेकिन हमारी तो सोच नाबालिग निकली। बेटे को अपराध का रास्ता दिखाकर उन्होंने कौन सी वयस्कता दिखाई है। बेटा नाबालिग था या वे।

तीन पीढ़ियों संग हिंदी के विकास में जुटा है पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव का परिवार

हिंदी को लेकर तमाम संस्थाएँ, सरकारी विभाग व विद्वान अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं। इन सबके बीच वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव का अनूठा परिवार ऐसा भी है, जिसकी तीन पीढ़ियाँ हिंदी की अभिवृद्धि के लिए न सिर्फ प्रयासरत हैं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी कई देशों में सम्मानित हैं। श्री कृष्ण कुमार यादव के परिवार में उनके पिता श्री राम शिव मूर्ति यादव के साथ-साथ पत्नी सुश्री आकांक्षा यादव और दोनों बेटियाँ अक्षिता व अपूर्वा भी हिंदी को अपने लेखन से लगातार नए आयाम दे रही हैं। देश–दुनिया की तमाम पत्रिकाओं में प्रकाशन के साथ श्री यादव की ७ और पत्नी आकांक्षा की ३ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। हिंदी ब्लहगिंग के क्षेत्र में इस परिवार का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अग्रणी है। ‘दशक के श्रेष्ठ ब्लॉगर दम्पति’ सम्मान से विभूषित यादव दम्पति को नेपाल, भूटान और श्रीलंका में ‘परिकल्पना ब्लॉगिंग सार्क शिखर सम्मान’ सहित अन्य सम्मानों से नवाजा जा चुका है। जर्मनी के बॉन शहर में ग्लोबल मीडिया फोरम के दौरान ‘पीपुल्स चॉयस अवॉर्ड’ श्रेणी में सुश्री आकांक्षा यादव के ब्लॉग ‘शब्द–शिखर’ को हिंदी के सबसे लोकप्रिय ब्लॉग के रूप में भी सम्मानित किया जा चुका है।

इनकी दोनों बेटियाँ अक्षिता (पाखी) और अपूर्वा भी इसी राह पर चलते हुए अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई के बावजूद हिंदी में सृजनरत हैं। अपने ब्लॉग ‘पाखी की दुनिया’ हेतु अक्षिता को भारत सरकार द्वारा सबसे कम उम्र में ‘राष्ट्रीय बाल पुरस्कार’ से सम्मानित किया जा चुका है, वहीं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मेलन में भी अक्षिता को ‘परिकल्पना कनिष्ठ सार्क ब्लॉगर सम्मान’ से सम्मानित किया गया। अपूर्वा ने भी कोरोना महामारी के दौर में अपनी कविताओं से लोगों को सचेत किया।

असल साहित्य

मैं नहीं साहित्य का मर्मज्ञ हूँ,
और ना हूँ काव्य की मैं आत्मा,
भावरस में कर्म की कूची डुबो-
छिड़क देता हूँ तुम्हारे उर पटल पर।

उर पटल पर व्याप्त हैं अगणित निशाँ,
चाह लो पढ़ना अगर तो काव्य हैं,
मन अगर कर लो निरा पाषाण ज्यों-
तो नहीं है अर्थ उसका काम का।

किन्तु जिनका है हृदय मधु मोम-सा,
चातकों के आर्त स्वर को बाँचते,
तूलिका के सरस पय छिड़काव में-
बाँच लेते हैं हृदय के भाव को।

काव्य उर से उर तलक इक सेतु है,
कोटि आशय भाव, रस, अनुभूतियाँ,
छोड़कर मय मोह मद मत्सर अवध-
डूब लो सबके हृदय के भाव में।

है यही साहित्य, समुचित काव्य यह,
जोड़ता है जो परस्पर आदमी,
छंद मानक शास्त्र से भी दूर हो-
किन्तु कहलाता असल साहित्य वह।

नारी को अधिकार मिले

जब से नारी को नारी का,
सम्बल मिलना शुरु हुआ।
वसुधा से उठकर नारी ने,
हाथों से आकाश छुआ।।
पग - बाधा बनकर नारी ने,
नारी को अक्सर रोका।
नारी ने इतिहास रचाया,
जब भी उसे मिला मौका।।

आँख खोलकर देख पाँव अंगद-
सा जमां जमीं पर है।
और हाथ में सीढ़ी अथवा,
सीढ़ी ही दोनों कर है।।
धरती से अम्बर तक नारी,
अथवा जग नारीमय है।
अवध नारियों से ही उन्नत,
नर-नारी है, किसलय है।।

इसीलिए अब से नारी को,
नारी का अधिकार मिले।
पतझड़ से व्याकुल उपवन को,
पावस का उपहार मिले।।
मानवता के लिए स्वयं का,
अहंकार अर्पण कर दें।
पौरुष के शुभ नवाचार को,
मनुज हेतु दर्पण कर दें।।

-डॉ०. अवधेश कुमार अवध,
शिलांग, मेघालय

अम्मा

दुनियां के जितने भी रिश्ते,
सबसे अधिक भाती है अम्मा।
देकर जन्म कोख से अपनी,
पालती पग-पग पर है अम्मा।।
जल थल नभ मे जो कुछ भी है,
उन सबसे अच्छी है अम्मा।
प्यासे का पानी भूखे का भोजन,
है अन्धे की लाठी अम्मा।।

हम सब भाई-बहिन जब खाते,
पेट भर गया कहती अम्मा।
बिस्तर मे सदा हमें सुलाकर,
नींद लेती नंगे मे अम्मा।।
परीश्रम की प्रतिमूर्ति बनकर,
कर काम हमे सिखाती अम्मा।
मकान को बनाती है घर,
अपने सत्कर्मों से अम्मा।।
काम बोझ किसे कहते हैं,
कभी न जान पाई अम्मा।
हरपल प्रसन्नता का भाव लिये,
खुशी-खुशी कर लेती अम्मा।।

बनती बच्चों के संग बच्ची,
ऐसी कला छुपाये अम्मा।
शिष्टाचार किसे कहते हैं,
बिना कहे बतलाती अम्मा।।
बुरा जो करने आता कोई,
सुधरने का पाठ पढ़ाती अम्मा।
अहित किसी का कोई करता,
विकराल रूप तब धरती अम्मा।।

रिश्तों की जब चादर फटती,
तुलपाई तब करती अम्मा।
आग के गोले जब बरसाते,
मुसलधार तब बरसती अम्मा।।
शिक्षा-संस्कारों की गठरी देकर,
ससुराल भेजती बेटी को अम्मा।
जहाँ-जहाँ भी विचरण करती,
समरसता पाठ पढ़ाती अम्मा।।
कोई भी बीमार जब होता,
डॉक्टर तब बन जाती अम्मा।
जीवन में अन्धकार जब घिरता,
प्रकाश पुंज बन जाती अम्मा।।
परिस्थिति देख कठोर-कोमल,
स्वभाव बनाती हर दिन अम्मा।
कभी मिठाई कभी खटाई,
कर्मफल सबको देती है अम्मा।।
बेटी के हाथ पीले करके,
भाग्य पर खूब इठलाती अम्मा।
देश के खातिर शहीद बेटे पर,
गर्व से भर जाती है अम्मा।।

शिक्षा-संस्कार बच्चों को देना,
अपना कर्तव्य समझती अम्मा।
वंशबृद्धि प्रगति सम्मान देखकर,
बहुत हर्षित होती है अम्मा।।

-डा. सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड

दीप जलाओ

कोई ऐसा दीप जलाओ।
मावश की काली रात मे।।
भीतर बाहर हो प्रकाश।
आप दीप जलाओं।।
फिर पूजा करो मिलके।
बाहर से घर आके।।
घर से न जाये बाहर।।
ऐसा दीप जलाओ।
गुरू मंत्र का जाप करके।।
आप पूजा करों शून्य होके।
रवि प्रकाश जब मिले तुम्हें।।
तब बैठालो लक्ष्मी प्रतिमा।
भक्ति भाव से करों पूजा।।
अच्छे से अच्छा भोग लगाओं।
तब करके पूजा प्रसाद बाटों।।
जब तिमिर निकले मन का।
जब घी से दीप जलेगा।
मावश की घटा रात में।
रवि किरन सा दीप जले।।
घर के आंगन से बाहर।
भले ही तेल दीप जले।।
दीप ज्योति से दीप मिले।
मावश की काली रात में।।
फिर होगा भीतर बाहर।
मन के अन्दर प्रकाश।।
फटाखे फूटते रहे बाहर।
मन के कुंठित भाव के।।
कोई ऐसा दीप जलाओं।

-पंड़ित ईश्वरी प्रसाद तिवारी
छिंदवाड़ा, म0प्र0

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन –1500/ रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये खाता संख्या–66600200000154, आईएफएससी कोड–(BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर
2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था
4.विमोचन की व्यवस्था
5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011
ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

अक्सर

ज़िन्दगी की तन्हाईयो में जब पीछे मुड़कर देखता हूँ;
तो धुंध पर चलते हुए दो अजनबी से साये नज़र
आते है ..
एक तुम्हारा और दूसरा मेरा.....!
पता नहीं क्यों एक अंधे मोड़ पर हम जुदा हो गए थे;
और मैं अब तलक उन गुमशुदा कदमो के निशान ढूंढ
रहा हूँ.
अपनी अजनबी ज़िन्दगी की जानी पहचानी राहो में!
कहीं अगर तुम्हे "मै" मिला;
तो उसे जरुर गले लगा लेना,
क्योंकि वो 'मैं' अब तन्हा है ......!

अक्सर ...
बारिशो के मौसम में;
यूँ ही पानी की तेज बरसाती बौछारों में;
मैं अपना हाथ बढाता हूँ कि तुम थाम लो,
पर सिर्फ तुम्हारी यादो की बूंदे ही;
मेरी हथेली पर तेरा नाम लिख जाती है ..!
और फिर गले में कुछ गीला सा अटक जाता है;
जो पिछली बारिश की याद दिलाता है,
जो बरसो पहले बरसी थी .
और; तुमने अपने भीगे हुए हाथो से मेरा हाथ पकड़ा था;
और मुझमे आग लग गयी थी .
तुम फिर कब बरसोंगीजानां ....!

अक्सर ....
हिज्र की तनहा रातो में
जब जागता हूँ मैं-तेरी यादो के उजाले में;
तो तेरी खोयी हुई मुस्कराहट बिजली की तरह कौंध जाती है,
और मैं तेरी तस्वीर निकाल कर अपने गालो से लगा लेता हूँ .
इस ऐतबार में कि तुम शायद उस तस्वीर से बाहर आ जाओ
पर ऐसा जादू सिर्फ एक ही बार हुआ था,
जो कि पिछली बहार में था,
जब दहकते फ्लाश की डालियों के नीचे मैंने तुम्हे छुआ था.
तुम जो गयी, ज़िन्दगी का वसंत ही मुरझा गया;
अब पता चला कि;
ज़िन्दगी के मौसम भी तुम से ज़ेरेसाया है जानां!

अक्सर ...
मैं तुम्हे अपने आप में मौजूद पाता हूँ,
और फिर तुम्हारी बची हुई हुई महक के साथ;
बेवजह सी बाते करता हूँ;
कभी कभी यूँ ही खामोश सडको और अजनबी गलियों में,
और पेड़ो के घने सायो में भी तुम्हे ढूंढता हूँ.
याद है तुम्हे-हम आँख मिचोली खेला करते थे
और तुम कभी कभी छुप जाती थी
और अब जनम बीत गए ..
ढूंढें नहीं मिलती हो अब तुम ;
ये किस जगह तुम छुप गयी हो जानां !!!

अक्सर .....
उम्र के गांठे खोलता हूँ और फिर बुनता हूँ
बिना तुम्हारे वजूद के .
और फिर तन्हाईयाँ डसने लगती है ..
सोचता हूँ कि तेरे गेसुओं में मेरा वजूद होता तो
यूँ तन्हा नहीं होता पर ..
फिर सोचता हूँ कि ये तन्हाई भी तो तुमने ही दी है .
ज़िन्दगी के किसी भी साहिल पर अब तुम नज़र
नहीं आती हो ...
अक्सर मैं ये सोचता हूँ की तुम न मिली होती तो
ज़िन्दगी कैसी होती
अक्सर मैं ये सोचता हूँ कि तुम मिली ही क्यों;
अक्सर मैं ये पूछता हूँ कि तुम क्यों जुदा हो गयी?
अक्सर मैं बस अब उदास ही रहता हूँ
अक्सर अब मैं जिंदा रहने के सबब ढूंढता हूँ ...
अक्सर........

अंतिम यात्रा

एक दिन ऐसे ही प्रभु की भेजी हुई नाव में बैठकर
एक न लौटने वाली यात्रा पर चले जाऊँगा!
अनंत में खो जाने के लिए
धरती में मिल जाने के लिए
अंतिम आलिंगन मेरा स्वीकार करो प्रभु
मैं भी तेरा, मेरा जीवन भी तेरा प्रभु
मैं मृत्यु का उत्सव मनाता हूँ प्रभु

बस मेरे शब्द और मेरी तस्वीरे ही मेरे निशान होंगे प्रभु
मुझे स्वीकार करो प्रिय प्रभु
इसी उत्सव के साथ, इसी खुशी के साथ
मैं अंत में तुझमे समां जाऊं प्रभु
-स्व०विजय कुमार सप्पत्त, सिकन्दराबाद, तेलांगना

ग़ज़ल

बिगड़ते है बहुत से काम सबके जल्दबाजी में
जो करते जल्दबाजी वे सदा जोखिम उठाते है।
हमेशा छल कपट से जिंदगी बरबाद होती है
जो होते मन के मैले, वे दुखी कल देखे जाते है।
बिना कठिनाईयों के जिंदगी नीरस मरूस्थल है
पसीनों से सिंचे बागों में ही नित फूल आते हैं।
किसी को कहॉ मालुम कि कल क्या होने वाला है
मगर क्या आज हो सकता समझ के सब बताते है।
जहॉ बीहड़ पहाड़ी, घाट, जंगल खत्म हो जाते
वहीं से सम सरल सड़कों के सुन्दर दृश्य आते है।
कभी भी वास्तविकतायें सुखद उतनी नहीं होती
कि जितनें कल्पना में दृश्य लोगों को लुभाते हैं।
निकलना जूझ लहरों से कला है जिंदगी जीना
जिन्हें इतना नहीं आता उन्हीं को दुख सताते हैं।
वही रोते है रोना, भाग्य का अपने अनेकों से
परिस्थितियों का जो अनुकूल खूद न ढ़ाल पाते है।

-प्रो०सी०बी० श्रीवास्तव 'विदग्ध'
जबलपुर, म०प्र०

गीत

जब अक्षर हुए हमारे, जीवन में फैले उजियारे
शिक्षा पहुंची आंगन द्वारे, सबके बिगड़े भाग्य संवारे
अक्षर है जीवन के साथी, अक्षर दीपक अक्षर, बाती
शिक्षा सुख के फूल खिलाती, सबको अपना हक दिलवाती
अक्षर मन के भाव सुधारे, नफरत को ये सदा ललकारे
निर्मल सी हो गई जिन्दगी, शब्दों में खो गई जिन्दगी
दूर हुई दुनिया की गन्दगी, प्रेम से करो प्रभु की बन्दगी
ईश्वर है सबसे न्यारे, जो दिखाते स्वर्ग के नजारे
जीने के नित्य नये तरीके, अक्षर से हमने सीखे
हंसी खुशी में हर पल बीते, रहे प्रेम का प्याला पीते
मिल गये अब सच्चे सहारे, नहीं भटकेंगे हम बंजारे
जब भी हमने जोड़े अक्षर, भ्रम मिटा भीतर बाहर
प्रगति का अब मिला अवसर, नहीं झुकेगा अपना भी सर
मिट गये अज्ञांन अंधियारे, दूर हटे बादल कजरारे
अक्षर को परमेश्वर मानो, शिक्षा कि महिमा पहचानो
शब्दों को जानो पहचानो, मेरा कहा आज तुम मानो
शीघ्र ही कष्ट मिटेंगे सारे, ईश्वर ने किये ईशारे।।

-रामचरण यादव
बैतूल, म०प्र०

तुम्ही मेरी प्रेरणा हो

तुम्ही मेरी प्रेरणा, प्रिय, तुम्ही मेरी प्रेरणा हो।
भाव की अभिव्यक्ति, मेरे काव्य की प्रस्तावना हो।
तुम्ही मेरी प्रेरणा हो।।
ग्रीष्म कका शैशव शिशिर की धूप तुम हो।
कल्पना का इन्द्र धनुषी रूप तुम हो।
शब्द की स्वप्निल मधुर झंनकार तुम हो।
गीत मेरे, गीत का श्रृंगार तुम हो।।
तुम्ही मेरे हृदय का उल्लास, मेरी वेदना हो।
तुम्ही मेरी प्रेरणा हो।
हो सके तो आज कुछ वरदान दे दो।
गीत का मेरे प्रगति का दान दे दो।
डालकर डेरा हृदय में आज प्रियवर।
भावनाओं को नया अभियान दे दो।।
मुझे दे दो यह क्षणिक अधिकार कर लूँ अर्चना।
तुम्ही मेरी प्रेरणा हो।

-रमेश चन्द्र पाण्ड़ेय 'शलभ'
गोला गोकर्ण नाथ (खीरी)

पृथ्वी पर
हरियाली,
लाती है
जीवन में
ख़ुशहाली
NewSuvichar.com

राष्ट्रीय गोष्ठी

भारतीय जन मानस प्रभु राम के चरित्र से निरंतर प्रभावित होता रहेगा : डॉ० सुनील देवधर

हमारे राम मंदिर देवालय में नहीं हैं। जन जीवन में हैं, लोग चर्चा में हैं, नाटकों में हैं, संवादों में हैं और वो हमारे साथ हैं। उक्त उदगार विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान प्रयागराज के तत्वावधान में आयोजित आभासीय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित ड. सुनील देवधर सहायक निदेशक (कार्यक्रम) आकाशवाणी, पुणे, महाराष्ट्र ने अपने उदबोधन में कही। जिसका विषय 'संस्कृत में राम कथा'। उन्होंने आगे कहा कि, हम अपने देवताओं को अपने साथ रखते हैं। यह हमारी संस्कृति है। भाष्य के 13 नाटक जिसमें दो नाटक प्रतिमा और अभिषेक के प्रसंगों का बखान किया और तुलसी के राम, केशव के राम एवं राम की राजनीति, नारी के प्रति सोच, न्याय व्यवस्था, राज्य शासन आदि के बारे में विचार व्यक्त किए। श्री राम से संबंधित कई दोहों के साथ अंत में उन्होंने लोक भाषा में कहा कि,- एक हते राम, एक हते रामन्ना, जे हते क्षत्रिय, वे हते बामन्ना, विन ने उनकी नार हरी, उन्ने उनकी नाश करी, बात को होगओ बातन्ना, तुलसी लिख गए पोथन्ना।

वक्ता के रुप उपस्थित डा. अमिता एल. टंडेल, हिंदी विभागाध्यक्ष -आर्ट्स एंड कामर्स कॉलेज, दमन दीप ने कहा-राम शब्द बोलने के साथ ही हमारे रोम रोम में परमात्मा का निवास होता है। उनकी अनुभूति हमारे अंदर अभिव्यक्त होती है। इक्ष्वाकु कुल में जन्मे प्रभु राम बड़ों की आज्ञा का पालन करते हैं। सर्व धर्म का पालन करने वाले हैं। प्राणी मात्र के रक्षक हैं। सर्वगुण संपन्न हैं। वर्णाश्रम का पालन पालन करते हैं। वेद वेदांग के परगामी हैं। धेर्य में हिमालय के समान, पराक्रम में युद्ध में अग्नि के समान, अच्छे भाई, मातृ पितृ-भक्त आदि उनके चरित्र की विशेषताओं का बखान किया।

दूसरी वक्ता डा. मीना खरात, सहयोगी प्राध्यापक, श्री मुक्तानंद महाविद्यालय, औरंगाबाद, महाराष्ट्र ने वालमीकी जी का जीवन परिचय दिया। क्रौंच पक्षी की कथा सुनाई और बताया कि किस तरह बाल्मीकि

जी कवि बने कहा कि, सदाचारी, संयमी, नीतिवान, आदर्श चरित्र , आदर्श राजा का वर्णन वाल्मीकि ने अपनी रामायण में किया है। इसके पढ़ने से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त होते हैं। राम के चरित्र की आवश्यकता आज भी हमारे समाज के लिए है। राम एक आदर्श हैं। जीवन के लिए राम प्रतिज्ञा पालन करने को प्रथम धर्म मानते हैं।

अध्यक्षीय उदबोधन में डा. शहावुद्दीन नियाज़ मोहम्मद शेख, संस्थान अध्यक्ष, पुणे , महाराष्ट्र ने कहा कि संस्कृत भारतीय भाषाओं की जननी है। उसे हम देव भाषा कहते हैं। इसका साहित्य भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। संस्कृत साहित्य में रामकथा आदर्श तथा अनुकरणीय है। मानव के रूप में राम का चरित्र गढ़ा गया है। आदि रामायण में राम सगुण निर्गुण परम तत्व हैं। पृथ्वी पर कौशलपुरी ही त्रिलोक है। श्रीमद् भागवत की कृष्ण लीला इसमें रामलीला के माध्यम से 18वें अध्याय में वर्णन है। यह दार्शनिक और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

कार्यक्रम का उत्तम संचालन डा. रश्मि चौबे, गाजियाबाद ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती ज्योति तिवारी-इंदौर, मध्य प्रदेश की सरस्वती वंदना से हुई। स्वागत भाषण श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, रायबरेली, उत्तर प्रदेश जी ने कविता सुनाते हुए दिया।

आभार प्रदर्शन डा. मुक्ता कान्हा कौशिक, रायपुर, छत्तीसगढ़ ने दिया और कहा- जिनके मन में राम है। उनके मन में बैकुंठ धाम है।

कार्यक्रम में संस्थान सचिव डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी, डा. भरत शेणकर-महाराष्ट्र, डॉ० नज़मा मलेक-गुजरात, डॉ० सीमा वर्मा-लखनऊ, उ०प्र०, डॉ० सरस्वती वर्मा-छत्तीसगढ़, ड.सुधा सिन्हा-बिहार आदि अन्य अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत के

फरवरी २०२२ के आभासी आयोजन

1—04.02.2022, सायंकाल 7 बजे, उत्तर प्रदेश राज्य इकाई की काव्य गोष्ठी।

2—06.02.2022, अपरान्ह 3 बजे, बाल संसद, विषयः बंसत पंचमी, हजरत अली जन्म दिवस, गुरु रविदास एवं राष्ट्रीय विज्ञान दिवस।

3—10.02.2022, छत्तीसगढ़ राज्य इकाई का आयोजन, सायंकाल 7 बजे।

4—13.02.2022, कर्नाटक् राज्य इकाई का आयोजन, सायंकाल 7 बजे।

5—15.02.2022, सायंकाल ७ बजे राष्ट्रीय सामाजिक गोष्ठी, विषयः वर्तमान में गिरता शिक्षा का स्तर और शिक्षकों की भूमिका

6—19.02.2022, सायंकाल 7 बजे, महाराष्ट्र राज्य इकाई का आयोजन, विषयः शिवजयंती उत्सव समारोह,

7— 20.02.2022, सायंकाल 7 बजे, युवा संसद, विषयः वर्तमान समय में युवाओं की मानसिक दशा

11—23.02.2022, डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी की पुस्तक 'सगिनी' पर चर्चा, सायंकाल 7 बजे।

12—26.02.2022, मध्य प्रदेश राज्य इकाई का आयोजन, सायंकाल 7 बजे।

13—27.02.2022, तमिलनाडु राज्य इकाई का आयोजन, सायंकाल 7 बजे।

14— 28.02.2022 को राष्ट्रीय आभासी गोष्ठी **''अन्य भारतीय भाषाओं में रामकथा'**

कहानी

आजादी के दिवाने

-अनिता पंडा, मेघालय

(नेपथ्य में आजादी की क्रान्ति पूरे देश के साथ-साथ पूर्वोत्तर के राज्य मेघालय में भी। अपनी ही भूमि गुलामी की जंजीरों कोबब तोड़ने के लिए क्रान्तियाँ हुई। चिंगारी फूटी खासी पर्वतीय क्षेत्र में और नेतृत्व किया -उतिरोत सिंह ने। आजादी के इस दिवाने अंग्रेजों ने धोखे से कैद कर ढ़ाका के जेल में बन्द कर दिया। आपने देश वासियों को आजादी का संदेश देकर उन्होंने अन्तिम साँस ली। अंग्रेज चैन की साँस भी लेने नहीं पाए थे कि खुली हवा में घूमने वाले इन आदिवासियों क्रांति की दूसरी चिंगारी फिर भड़का दी। इस बार क्रांति का केंद्र बना-जोवाई और नेता बने -उ कियांग नांग्बा।)

(दृश्य-1,स्थान-जंगल, एक खुला मैदान। एक बड़े चट्टान पर कियांग नांग्बा बैठे हैं। उनके चारों ओर तीन पुरूषों और एक स्त्री बैठी है।)

किंड़िया (दौड़ता-दौड़ता आता है।)-उ कियांग, उ कियांग! तुमने कुछ सुना, तूमने कुछ सुना?

किटलांगकी-क्या बात है किंड़िया? तुम इतना क्यों घबराए हुए हो?

किंड़िया-अरे!घबराएँ नहीं तो क्या करें? तुमलोग तो जंगल में गाँव से दूर बैठे हो, उधर अंग्रेजों ने कहर बरसा रखा है।

उ कियांग-(क्रोध में)हाँ, बताओं क्या किया है उन जालिमों ने हमारे भाई-बहनों के साथ? कहीं वे उन पर जुल्म तो नहीं कर रहे हैं?

प्रीतिसिया-(क्रोध में)कहीं वे हमारे गाँव के औरतों और बच्चों के साथ मारपीट तो नहीं कर रहे हैं? गाँवों में केवल बूढ़े ही रह गए हैं। वे कर भी क्या सकते हैं? (रोती है) समझ में नहीं आता कि इन फिरंगियों से कब छुटकारा मिलेगा, हमें कब मुक्ति मिलेगी? (रोती है)

उ कियांग-रोओ मत, मत रो बहन। अगर तुम ही रोओगी तो हमारे अपने लोगों को हौंसला कौन देगा? जानती हो, प्रीतिसिया बहते हुए आँसू तुम्हारे अन्दर सुलगती क्रान्ति की चिंगारी को ठन्ड़ा कर देंगे। जो हम नहीं चाहते। इन्हें संभाल कर रखो, भविष्य में काम आएगें।

प्रीतिसिया-(सिसक कर) क्या करूँ? जब अपनी जमीन पर फिरंगियों का जुल्म देखती हूँ, तो बर्दाश्त नहीं होता क्यों ले लेना चाहते हैं ये हमारा वतन, हमारी मिट्टी हमसे। हम तो अपनी छोटी-सी आजाद दुनिया में कितने खुश थे। क्यों बाँधना चाहते हैं, ये हमें गुलामी की जंजीर में? क्यों लूट लेना चाहते हैं ये हमारा सबकुछ? यहाँ तक कि इज्जत-आबरू भी।अब नहीं सहा जाता। नहीं सह सकते हम ये जुल्म उ कियांग-(गम्भीरता से) हम अपनी मिट्टी को गुलाम होने नहीं देंगे। इसलिए तो हम यहाँ इकट्ठे हुए हैं। हमें शान्त हो योजना बनानी होगी।

किंड़िया-पर कैसे उ कियांग? देखो पहले अंग्रेजों ने हमारे मुखियाओं के हथियार छीन लिए, जिससे हम उन के विरूद्ध हथियार ही न उठा सके सुचियांग-हमारे मुखिया क्यों नहीं कुछ करते?

किटलांग-क्या करेंगे हमारे मुखिया? उनके सारे अधिकार छीन लिए गए हैं। अंग्रेजों ने गरीब जनता पर तरह - तरह के कर लगा दिए हैं। जो कर नहीं दे पाता, उसे अपनी जमीन से बेदखल कर दिया जाता है। लोग किससे न्याय माँगे? किससे करे शिकायत?

सुचियांग-इसीलिए कुछ नहीं कर पाने के कारण मुखिया अन्दर ही अन्दर तिलमिला रहे हैं उ कियांग-जानते हो दोस्तों! दमन का सबसे बड़ चक्र इन मुखिया लोगों पर चल रहा है। यह बात हमारे लिए फायदे मन्द साबित होगी।

प्रीति-(चौंकते हुए) वो कैसे उ कियांग? उ कियांग-सोचो, जैन्तिया पहाड़ियों की जनता के साथ-साथ सारे गाँव के मुखिया हमारे साथ मिल जाए तो हमारी ताकत बढ़ जाएगी और पूरा जोर लगाकर अपनी मातृभूमि को आजाद करेंगे। इसमें हमें तुम्हारी मदद चाहिए।

प्रीतिसिया-(जोश में) इस नेक काम में किस बात की देरी? उ कियांग क्षेत्र की सारी औरतें तुम्हारे साथ हैं, पर हमें करना क्या होगा?

उ कियांग-प्रीतिसिया, तुम्हें गाँव-गाँव घूमना होगा। लोगों में जोश भरना होगा। उन्हें बताना होगा कि अंग्रेजों ने हमें न केवल अपनी जमीन से बेदखल किया बल्कि अब वे हमारे रीति-रिवाज, दाह-संस्कार सब में दखलान्दाजी कर रहे हैं। हम सबको

मिलकर इसका विरोध करना है। तुम्हारे पर किसी को शक भी नहीं होगा।

किंडिया- वे हमें अपना तीज-त्यौहार भी ठीक से मनाने नहीं देते। उन्हें डर है कि कहीं उसी बहान इकट्ठे न हो जाए।

किटलांग-वे जानते हैं कि हम वीर और साहसी हैं। अगर हम सब मिल गए तो उन पर भारी पर जाएगें।

सुचियांग-और कहीं ऐसा न हो कि उन्हें इस जगह को छोड़कर जाना पड़े।(सब हँसते हैं)

प्रीतिसिया-उन्हें हमारी जमीन छोड़ना ही होगा। उनके चाहने या न चाहने से क्या होता है।? सच्चाई यह है कि जब-जब दमन-चक्र तेज होता है, तब-तब क्रान्ति का बीज जन्म लेता है।

उ कियांग-और क्रांति का यह बीज हमारे दिलों में एक विशाल वृक्ष बन चुका है। आओ, आज कसम खाते हैं कि आजादी इस लड़ाई में हम अपना कदम कभी पीछे नहीं हटाएंगे। (जलती हुई आग के सामने पाँचों कसम खाते हैं)

दृश्य-2

(रात्रि का समय, आग जल रही है। सभी अपने हथियार तेज कर रहे हैं। इतने में प्रीतिसिया और गाँव के दो मुखिया का प्रवेश)

प्रीतिसिया-(खुशी से) उ कियांग, उ कियांग! हमारे लिए अच्छी खबर है।

उ कियांग-अच्छी खबर कैसे? क्या अंग्रेज हमारा वतन छोड़ कर चले गए?

प्रीति- देखो तो हमारे साथ कौन आया है?

उ कियांग-कौन? अरे!गाँव के मुखिया, आइए,आइए आपका स्वागत है।

मुखिया-धन्यवाद,मेरे साथ दूसरे गाँव के मुखियाओं ने अपना प्रतिनिधि भी भेजा है।

उ कियांग-आपके इलाके क्या हाल है? सुना है, फिरंगियों ने खूब उत्पात मचा रखा है। यहाँ तक कि उन्होंने आपलोगों के सारे अधिकार तक छीन लिए हैं।

मुखिया-(दुखी होकर) क्या करूँ? कुछ समझ में नहीं आता। अपनी आँखों के सामने अपने लोगों इस तरह मरता नहीं देख सकता। ब्रिटिश सिपाही घर-घर घुसकर लूट-पाट कर रहे हैं। निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे हैं। हमसब लाचार और बेबस हैं

उ कियांग-हम सबको एक होकर इनका सामना करना होगा। आप तैयार हैं?

प्रीति-(जोश में) एकता में बल है। अगर हममें है बल, तो किसमें है दम? हम सब तैयार हैं।

किंड़िया-पर, अंग्रेजों के पास बड़ी फौज हैं, बन्दूकें है। हम उनका सामना कैसे करें?

किटलांग-हम अंग्रेजों को बिना योजना बनाए नहीं जीत सकते।

उ कियांग-किटलांग तुमने ठीक कहा है। हम अंग्रेजों को सीधी लड़ाई में नहीं जीत सकते। पर याद रखो कि यह जगह हमारी है और हम इस जगह के चप्पे-चप्पे से वाकिफ हैं। हमारे लिए सबसे अच्छा होगा छापामार युद्ध।

सुचियांग-हम जंगल में छिपाकर अंग्रेजों पर आक्रमण करेंगे। अचानक आक्रमण से वे घबरा जाएंगे। घने जंगलों में हमें खोज भी नहीं पाएंगें।

उ कियांग-इसके लिए हमें कई दल बनाने होंगे। तुम सब लोगों को अपना-अपना मोर्चा संभालना होगा। तुम लोग अपने दलों का नेतृत्व करोगे।

सब-हम लोग तैयार हैं। बोलो क्या करना है?

उ कियांग-मुखिया, आप और प्रीतिसिया गाँव जाएं। उस इलाके के सभी मुखिया अपने गाँव के बच्चों और बूढ़ों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दें। गाँव के वैद्य युद्ध में घायल लोगों का इलाज करेंगे।

प्रीति- मैं गाँव की औरतों से खाना बनवाकर अपने वीर सैनिकों तक पहुँचाउँगी और जरूरत पड़ी तो छुरी से दुश्मनों का गला भी काट दूँगी। आजादी की इस लड़ाई में हम औरतें आपके साथ हैं।

उ कियांग-हमें तुम पर गर्व है प्रीतिसिया। अच्छा, तुम और मुखिया जाओ और अपना-अपना मोर्चा संभालों।

(दोनों चले जाते हैं। धुन वन्देमातरम्)

उ कियांग-किंडिया हमारे पास कितने क्रांतिकारी हैं?

किंड़िया-लगभग पचास हजार सैनिक।

किटलांग-उ कियांग, जानते हैं? सभी सैनिक छापामार युद्ध में निपुण हैं और सभी का निशाना अचूक है।

सुचियांग-आगे की क्या रणनीति है, उ कियांग?

उ कियांग-हम आज खासी जैन्तिया मुख्यालय जोवाई थाने पर रात में धावा बोलेंगे। याद रखें, हमें अपनी जनभूमि को आजाद कराना है। इसके लिए मौत से क्या डरना। मौत तो एकदिन आनी ही है। (सब चले जाते हैं। वन्देमातरम् का स्वर)

दृश्य परिवर्तन

(थाने का दृश्य-एक अंग्रेज अधिकारी और दो

सिपाही)

सिपाही-(घबराया हुआ) सरकार, सरकार, दुहाई हो, दुहाई हो।

अधिकारी-क्या हुआ? तुम इतना घबराया हुआ क्यों हैं? इलाके से क्या खबर लाया? कियांग नांगबा का कुछ पता चला? कियांग नांगबा का कुछ पता चला?

सिपाही-सरकार, गजब हो गया। हमारे सारे साथी मारे गए। मैं किसी तरह अपनी जान बचाकर यहाँ पहुँचा हूँ

अधिकारी-क्या बकता है? तुम्हारा थानेदार कहाँ हैं?

सिपाही-(घबराते हुए) साहब, क्रांतिकारियों ने रात में थाने पर धावा बोल दिया और आग लगा दी। सबकुछ जल गया।

अधिकारी- (आश्चर्य से) क्या कहाता है? आग लगा दिया, दिय इज नॉट पासबिल। आई कांट बिलीव दिस। जंगली लोग कइसे किया ये सब? क्या तुम लोग सो रहा था

(तभी दूसरे सिपाही का प्रवेश)

अधिकारी-पीटर, गाँव से क्या खबर लाया, तुम वहाँ का औरत लोग से कियांग नांगबा के बारे मे पता किया?

पीटर- सर, हमलोगों ने घर-घर तलाशी लिया। उनको मारा-पीटा, उनके गोदामों में आग भी लगा दी पर गॉड़ कसम सर, वो लोग मुँह नहीं खोलते। हमलोग इतना टार्चर करते है पर वे न जाने किस मिट्टी के बन हैं कि अपना मुँह नहीं खोलते। कुछ समझ नहीं आता कि क्या करें?

अधिकारी- डर से जुबान नहीं खुलता तो लालच दो। जरूर कोई न कोई होगा, जा लालच में आकर हमको कियांग नांगबा के पास पहुँचा देगा। (गुस्से में) हम कुछ नहीं जानता। हम बस कियांग नांगबा मानता। समझा तुम।

पीटर-कोशिश करूँगा।

अधिकारी-कोशिश नही पीटर, हम रिजल्ट माँगता, रिजल्ट। हम ब्रिटिश गवमेंट को क्या जवाब देगा। (चिल्लाकर) अब जाओ, अच्छा खबर लेकर आना।

दृश्य-३

(जंगल में कियांग नांगबा और उसके साथी बैठे हुए हैं। इतने में प्रीतिसिया दौड़ती-दौड़ती आती हैं)

उ कियांग-क्या बात है प्रीतिसिया? तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो? हमने तो अपना काम योजना के अनुसार बखूबी कर डाला।

किंड़िया-हाँ, हाँ, गाँव की औरतों ने भी बड़ी चतुराई से अंग्रेजी सिपाहियों खूब शराब पिलाकर उन्हें बेहोश कर दिया और जंगल में छिपे हमारे नौजवानों को खबर कर दिया। उन्होंने उन सिपाहियों को मारकर हमारी बेइज्जती का बदला ले लिया। (हँसता है)

किटलांग-(हँसते हुए) अब तो अंग्रेजों का हमारी जमीन को छोड़ना होगा।

प्रीतिसिया-(घबराकर) मत हँसों इतना, मत हँसों। हँसने की बात नहीं है बल्कि दुखद समाचार है (रोती है) मुझे डर है कि उ कियांग-पहले रोना बन्द करो प्रीतिसिया, चुप हो जाओं। बताओ बात क्या है? किस बात का डर है?

प्रीतिसिया-डर इस बात का है कि कहीं तुम पकड़े न जाओ। फिर क्या होगा हमारे आन्दोलन का? कौन करेगा हमारी अगुवाई?

किटलांग-हमारी शक्ति बिखर जाएगी। हम गुलामी से कैसे आजाद होंगे?

उ कियांग-आखिर बात क्या है? हम तो अपनी योजनानुसार काम कर रहे हैं और हमें सफलता भी मिल रही है। सभी गाँव के मुखिया भी हमारे साथ हैं।

प्रीतिसिया-सारे गाँव के मुखिया नहीं उ कियांग, एक मुखिय ऐसा है, जो अंग्रेजों से मिल गया है। अंग्रेजों ने उसे पैसो का लालच दिया है।

किंड़िया-(दुःख से) इन्हीं गद्दारों के कारण ही हमारा देश गुलाम बना है।

प्रीतिसिया-उ किंयांग, वे तुम्हें भी प्रलोभन देना चाहते हैं। जिससे तुम क्रांति का रास्ता छोड़ उनके साथ मिल जाओं।

उ कियांग-(जोश में) असम्भव, मैं जीते जी अंग्रेजों की आधीनता नहीं स्वीकार कर सकता। यदि वे सन्धि करना चाहते हैं, तो वे हमें पूरी आजादी दें। हमारी संस्कृति और परम्परा को यथावत रहने दें।

किंडिया और किटलांग-वे ऐसा हरगिज नहीं करेंगे।वे तो तुम्हें जिंदा पकड़ना चाहते हैं, जिससे वे मनमानी कर सकें। (प्रीतिसिया रोती हैं।)

उ कियांग-(गम्भीर स्वर में) आपलोग विश्वास, साहस और आशा से मेरा चेहरा देखिए। मातृभूमि की परतंत्रता की बेडियाँ काटने के लिए अपना संघर्ष जारी रखिए। एक दिन अवश्य सफलता मिलेगी। आजादी की यह छोटी-सी चिन्गारी आग की लपटें बनकर पूरे देश में फैल जाएगी और हम सब आजाद होंगे। रीयॉग ई! जय मातृभूमि सभी-री यॉग ई! री यॉग ई!

संस्मरण

चलो बुलावा आया है

-सुधीर श्रीवास्तव
गोण्डा, उ.प्र.

वर्ष 2013 की बात है, उस समय मैं हरिद्वार में लियान ग्लोबल कंपनी में काम कर रहा था। कंपनी में होली की छुट्टियां हो गई थी। कुछ गिने चुने लोगों को छोड़कर अधिकांश लोग अपने घरों को निकल चुके थे। मैं फरवरी में ही घर से लौटा था, लिहाजा अब फिर तुरंत जाना भी अनुचित ही लगा।

शाम को दो अन्य साथियों के साथ छुट्टियों में घूमने जाने की पूर्व प्लानिंग पर चर्चा के अनुसार समय और स्थान की चर्चा हुई। मगर तब वैष्णो देवी की कोई चर्चा ही नहीं हुई। सुबह निकलना भी था, अतः हम लोग अपने अपने कमरों पर चले गये।

रात करीब 11बजे दोनों में से एक मित्र का फोन आया-चलो बुलावा आया है।

मैंने भी मस्ती से पूछा-लगता है प्लान में कुछ तब्दीली हो गई।

उधर से मित्र ने बताया-पूरा प्लान ही उलट गया, बस आपकी सहमति चाहिए (कारण मैं उन दोनों से उम्र और अनुभव में बड़ा था)।

मैनें पूरी बात पूछी तो पता चला कि अब हम लोग वैष्णो देवी के दर्शन करने चलेंगे। मैनें भी सहमति दे दी, क्योंकि मेरे बिना वो जाने वाले नहीं थे और मैं भी उन दोनों के अलावा भी अपने लिए माँ के सचमुच बुलावे जैसा अवसर मान टालने का इरादा भी नहीं रखता था। वैसे भी माँ के दर्शनों से अब तक मैं वंचित ही रहा।

अगले दिन हम तीनों सुबह ही निकल गये और हरिद्वार के बजाय हमनें ऋषिकेष से ट्रेन पकड़ने का फैसला किया। लिहाजा हम लोग हरिद्वार से पहले ऋषिकेष गये। ज्ञातव्य हो कि जम्मू जाने वाली ट्रेने हरिद्वार होते हुए ही जाती हैं।

हम तीनों ने ऋषिकेष में रामझूला, लक्ष्मण झूला का अवलोकन किया और गंगा स्नान का सुख उठाया, कुछेक मंदिरों के दर्शन, भ्रमण के बाद दोपहर में लगभग एक बजे अपनी यात्रा आरम्भ की और पूरी मस्ती करते हुए लगभग तीन बजे रात जम्मू पहुंचे। स्टेशन पर ही दैनिक क्रियाओं के बाद स्टेशन के बाहर से ही बस द्वारा कटरा पहुंचे और शीघ्रदर्शन के लालच में अपनी आगे की यात्रा शुरु कर दी। बाणगंगा में स्नान के साथ जारी यात्रा आखिर मंजिल तक पहुंच कर ही रुकी। सौभाग्य से हम तीनों के बाद ही शेष लोगों को उस पाली में रोक दिया गया। ताज्जुब यह कि हमारे लाइन में लगने से पूर्व तक हो रही वारिश भी हमारे लाइन में लगते ही बंद हो गई। बहुत ही सुकून से माँ के दर्शन का आनंद उठाने के अलावा हिमपात का नजारा भी दिख ही गया। सुदूर पहाड़ियों पर दिखा वह खूबसूरत दृश्य मन को मोह गया। जितना हम डर रहे थे, उतनी ही सरलता, सहजता, सुगमता से माँ वैष्णो देवी ने हमें अपना आशीर्वाद दिया। आपको बताता चलूँ कि माँ के दर्शनों का लाभ ठीक होली के दिन ही मिला। सचमुच यह अहसास करने को काफी था कि माँ ने वास्तव में हमें बुलाया था, तभी तो सबकुछ इतनी तेजी से हुआ कि कम से कम हमें और कुछ सोचने का मौका भी न मिला।

खैर माँ के दर्शन के बाद हम कालभैरव के दर्शन, आरती के बाद वापस हुए। मौसम ने फिर करवट बदला,और हमें रात्रि विश्राम रास्ते में ही करना पड़ा। सुबह जल्दी ही वापसी की राह पकड़ हम अपने मार्ग पर चल दिए और प्रसन्नता से माँ के दर्शनों से मुदित पुनः अगले दिन वापस हरिद्वार पहुंच गये।

आप सभी मेरे साथ बोलिए जय माता दी। ये थी हमारी पहली और अनियोजित वैष्णो देवी माँ की दर्शन यात्रा।

लघु कथाएं

इमोजी

आज वह बहुत खुश थी। आज उसका एम.ए. का रिजल्ट आया था। वह प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुई थी। विवाह के बाद भी उसने अपनी पढाई जारी रखा हुआ था,यह उसके लिए बहुत महत्वपूर्ण बात थी।

उसने अपना रिजल्ट सोशल मीडिया पर शेयर किया। पहले उसने अपने भैया को व्हाटस् एप किया। इसके पूर्व भी जब भी उसकी कोई छोटी-मोटी रचना किसी पत्रिका में छपती या कोई महत्वपूर्ण बात होती तो वह अपने भैया को व्हाटस् एप करती तो झट से उधर से ठेंगा दिखाता हुआ या तीन ऊँगली पर दाद देता हुआ इमोजी प्रकट हो जाता। पहले इन इमोजी को देख वह प्रसन्न हो उठती पर कभी कोई कमेंन्ट नहीं आने पर उसे दुःख भी होता। आज उसे लगा कि उसकी इस शानदार सफलता पर भैया चंद लाइन जरूर कमेंन्ट करेंगें।पर आज भी ठेंगा दिखाता हुआ इमोजी ही भेजा गया था।

लगातार चार सालों से भैया उससे केवल इमोजी की भाषा में बातें कर रहे है फोन पर हाँ, हूँ या कभी-कभी फोन नहीं उठाते। उनकी ओर से फोन नहीं आता। वह सोचती शायद लोगों के पास अब समय के साथ -साथ भाषा की कमी भी होते जा रही है। तभी तो लोग अब इमोजी की भाषा बोलने लगे हैं।

जब से उसकी शादी हुई है लगता है भैया-भाभी ने उससे मुक्ति पा लिया है। तभी तो कभी भी उससे नहीं बतियाते हैं। वह अपनी भावनाएं कल्पनाएं उनसे अभिव्यक्त करना चाहती है। जी भर कर बतिया कर अपने को हल्का कर लेना चाहती है। पर उनके पास शायद समय नहीं है या संवेदनाएं? वह समझ नहीं पाती।

आज भी भैया ने दाद देता हुआ इमोजी सेंड किया है। वह इन इमोजी को देख-देख कर बोर हो चुकी है। उसे बहुत दुःख हुआ। उसकी आँखें डबडबा गईं। उसने भी अपने भैया को एक इमोजी सेंड किया। एक रोती हुई गुड़िया की।

आश्चर्य भाई ने पुनः दाद देता हुआ इमोजी सेंड किया। उसने छलकते आंसुओं को पोंछते हुए अपना मोबाइल बंद कर दिया और अपनी आँखे बंद ली। उसे लगा कि वह स्वयं भी एक इमोजी बन चुकी है।

डॉ० शैल चन्द्रा, धमतरी, छत्तीसगढ़

ठंड

सुबह-सुबह पारस के पिताजी जी को पेपर पढ़ने की आदत थी। उम्र 97 साल परन्तु शरीर चुस्त दुरुस्त, कोई भी नहीं कह सकता था कि वह इतनी उम्र के हैं क्योंकि इस उम्र में भी वही तेजी और चेहरे पर नूर, जो देखता तो बस यही कहता कि माधव बाबू आप क्या खाएं हैं, जो चेहरे पर यह चमक आज भी क़ायम है.....!

ठंड के मौसम मे भी कोई गिला शिकवा नहीं था मौसम से।

घर में अपने प्रिय पोते राहुल के साथ ही अक्सर सोते थे, तभी घर के दरबाजे की बेल बजी।

कौन है, क्या काम है..?

के प्रश्न राहुल के दादा जी का,

हां, मालिक मैं रामू, अखबार वाला।

अच्छा, तभी माधव बाबू ने अपने प्यारे पोते राहुल से , जा राहुल अखबार दरबाजे पर परी है, अखबार वाला आवाज दे रहा है, अखबार ले आ।

दादा जी बहुत ठंड है, कैसे जाऊं.!

अरे पगले तेरी उम्र में तो मै सुबह-सुबह उठकर पढ़ने बैठ जाया करता था।

तभी राहुल की मम्मी का चाय के प्याले के साथ कमरे में प्रवेश,जी पिताजी चाय लीजिए। अरे राहुल तुम अखबार लाने नहीं गया।

राहुल की मम्मी, बीच में टोकते हुए पिताजी काफी ठंड है, और राहुल तो अभी बच्चा है, फिर क्यों इन्हें सुबह-सुबह तंग कर रहें हैं!

अभी आराम से सोने दीजिए न राहुल को।

तभी फिर बेल बजी, मैं अखबार वाले का स्टाफ हूं मैडम, दूसरी बार मैंने बेल बजाया है। राहुल की मम्मी के दरबाजा खोलते ही 9 साल का एक बालक ठंड से ठिठुरते हुए, मैडम महीना पूरा हो गया है, इसलिए अखबार के साथ बिल भी लाया हू, पैसे लेने हैं, फिर चुपचाप मैडम के चेहरे को देखते हुए पैसे लेने की प्रतीक्षा

करने लगा।

अरे लडके, कल आना, अभी छुट्टे नहीं है,

तभी अखबार वाले रामू का मधुर वाणी से प्रतिकार,

मैडम दे दीजिए न, नहीं तो मालिक पिटेगा और वैसे भी आज ठंड बहुत है, फिर आना पड़ेगा!

नहीं बोला न, छुट्टे नहीं है,

मैडम मैं छुटटे देता हूं न, आपकों।

तभी राहुल के दादाजी का अपनी बहू को निदेश, अरे पैसे दे दो बहू, तुम्हीं देखो कितना छोटा बच्चा है, देखो न कैसे ठंड से ठिठुर रहा है .!!

कितै कम कपड़े पहन रखें हैं इस लड़के ने और फिर मालिक भी तो.....!

तुम तो जानती ही हो कि पैसे नहीं ले जाने पर इस गरीब लडके को मालिक से मार भी पड़ेगी।

राहुल की मम्मी अब समझ चुकी थी कि राहुल के द्वारा ठंड के कारण अखबार नहीं लाने की बात पर अपने बेटे राहुल का पक्ष लेने का पुरस्कार उसे आज मिल गया था।बह अपने श्वसुर से जलभून कर अपने कमरे जाकर अखबार वाले रामू को पैसे देने के लिए बैग से पैसे निकालने लगी।

-डॉ० अशोक कुमार शर्मा, पटना, बिहार।

लक्ष्मी

घर में सबसे बुजुर्ग दादी अम्मा को चिंता हो रही थी कि कि उनकी बहू सुषमा की बहू मालती की पहली संतान लड़की होगी। घर की सबसे बुजुर्ग दादी अम्मा को काफी अनुभव था और शारीरिक गतिविधियों का ज्ञान भी अद्भुत। इस कारण वह अपनी बहू की बहू के रंग -ढंग और शारीरिक गतिविधियों को देख कर कह दी थी कि सुषमा तुम ज्यादा खुश मत हो तुम्हारी बहू मालती को पहली संतान लड़की ही होगी। इसलिए तुम्हें ज्यादा खुष होने की जरूरत नहीं है।

अपनी ददिया सास की इस बात से मालती काफी दुखी हो गई थी। किचन में खाना बनाते हुए वह अपनी सास और ददिया सास के बीच हो रही बातों को बड़ी उत्सुकता से कान लगाकर सुन रही थी। मालती दोनों की बातें सुनकर काफी सोच में पड़ गई थी कि क्या लड़की होना एक अपराध है? इस कारण वह दोनों के बीच हो रही बातों को सुनकर काफी दुखी हो रही थी। अभी अपनी सास और ददिया सास के बीच हो रही बातों को सुन ही रही थी कि उसने घड़ी देखी तो उसे पता चला कि अब तो विनोद, उसके पति के आने का समय हो गया है।

विनोद के आने के वक्त के अनुसार वह पहले से ही हर दिन विनोद के लिए कुछ नाश्ता तैयार करके रहती थी। मालती ऐसा इसलिए करती थी ताकि थका- हारा विनोद बैंक से आकर आराम से कुछ नाश्ता कर ले। विनोद बैंक में अधिकारी थे, इसलिए वहां काम के ज्यादा बोझ के कारण वह घर आते-आते काफी थक जाते थे। कारण था बैंक का शाखा प्रबंधक होना और उन पर शाखा की सारी जिम्मेदार भी रहती थी।

विनोद और मालती की शादी के भी डेढ़ वर्ष ही हुए थे। दोनों की उत्कृष्ट व्यवहार को देखकर मुहल्ले के लोग भी दोनों की जोड़ी को एक आदर्श जोड़ी मानते थे। बिना तिलक दहेज की शादी हुई थी इसलिए मोहल्ले में इस परिवार की काफी इज्जत थी। इस कारण भी मुहल्ले के लोग मालती और विनोद की जोड़ी की प्रशंसा करते नहीं सकते थे। यहां दोनों पति-पत्नि के बीच की केमिस्ट्री भी काफी अच्छी थी।

मालती के घर में आने से ही पूरा परिवार खुश था। घर में मालती की खूब प्रशंसा होती थी। घर में नई बहू मालती के आने से मालती के साथ सुषमा भी काफी खुश रहती थी।

97 वर्ष की सुभद्रा को जीवन का अच्छा खासा बहुत था। अनुभव के आधार पर सुभद्रा ने अपनी बहू सुषमा को बतला दी थी कि मालती के गर्भ में लड़की पल रही है। सुषमा तुम्हें ज्यादा खुश होने की जरूरत नहीं है क्योंकि तुम्हें पोता नहीं पोती मिलेगी। दादी अम्मा सुभद्रा घर की सबसे बुजुर्ग महिला जो थी। इसलिए सुषमा अपनी सास को कुछ बोलने की स्थिति में नहीं रहती थी। वह अपने सास की काफी इज्जत भी करती थी।

घर के सभी लोग मालती के गर्भावस्था के अंतिम महीनों में काफी चिंतित दिख रहे थे। किसी को विश्वास ही नहीं हो रहा था दादी अम्मा की बात क्या सही निकलेगी? परंतु सबसे बडी बात यह थी कि दादी अम्मा सुभद्रा अपनी

बहू सुषमा की बहू मालती के प्रथम संतान के रूप में लड़की होने की बात से निश्चित थी।

विनोद के आने पर नाश्ते के बाद परिवार के सभी लोग टीवी देखने मैं व्यस्त हो गए। फिर खाने की बारी आई और सभी खाने की तैयारी में लग गए। मालती अपनी सास के साथ मिलकर रात का खाना बनाती थी। इसमें मालती की सास सुषमा का काफी सहयोग रहता था।

खाना खाने के बाद सभी लोग अपने अपने कमरे में सोने को चले गए। अपने कमरे में मालती के आने के पश्चात विनोद ने मालती के चेहरे को थोड़ा दुखी देखकर पूछ ही बैठे हैं, क्या मालती कोई बात है क्या? क्यों तुम इतनी उदास लग रही हो? मालती ने तुरंत कहा, नहीं विनोद ऐसी कोई बात नहीं है।

विनोद के बार-बार कहने पर मालती ने दादी अम्मा की सारी कहानी दुखी मन से विनोद को बता दी। बता दी। इस पर विनोद ने कहा तुम बेकार में घबराती हो मालती। दादी अम्मा बड़ी ही नेक महिला है, देखती नहीं हो मोहल्ले के सभी लोग अपनी दादी अम्मा की कितनी कद्र करते हैं। हां, विनोद तुम ठीक कहते हो, वह तो कोई भी बात अपनी पेट में रहती ही नहीं है, सीधे बोल देती है। इसलिए ही तो दादी अम्मा की खूब कद्र है यहां, और तुम झूठ-मूठ का उदास सा चेहरा लिए मेरे सामने खड़ी हो। अरे हमारी दादी अम्मा तो सब बात खड़ी-खड़ी ही कह देती है, इसलिए इसमें तुम्हें घबराने की कोई जरूरत नहीं है। क्या अम्मा ने भी तुम्हें कुछ कहा है? तब मालती ने शान्त भाव से विनोद को कहा, नहीं विनोद अम्मा ने तो मुझे कुछ नहीं कहा है। दादी अम्मा तो अपनी बेटे अर्थात मेरे पापा को भी बहुत सारी बातें खड़ी-खड़ी ही कह देती है और तुम तो इतने दिनों से देख ही रही हो, क्या मेरे पापा कभी इसका कोई दुख मानते हैं, तो फिर तुम क्यों दुखी हो गई हो गई हो?

इन सब कारणों से ही दादी अम्मा की इस मोहल्ले में काफी इज्जत है। मेरे पापा भी उन्हें कुछ नहीं बोलते हैं। सभी लोग उनकी इज्जत करते हैं। तो, अरी पगली तो फिर तुम क्यों दादी अम्मा की बात का बुरा मान गई।

अरे यह सब बात दादी अम्मा अपने अनुभव से कहती है। इसमें घबराना क्या है? यह तो हम सब की दादी अम्मा का आशीर्वाद है। तुम्हें उसका बुरा नहीं मानना चाहिए और तो वह तो इस घर की सबसे बड़ी दादी अम्मा भी तो है, तो फिर उनकी किसी बात का हमसबज्ञक्यों बुरा माने!

9 महीने के बाद घर में एक सुंदर सी फूल सी गुड़िया का आगमन हुआ। घर में खुशियों की बरसात शुरू हो गई। घर में सबसे ज्यादा खुश दादी अम्मा ही थी क्योंकि घर में एक नन्ही सी गुड़िया जो आई थी और लोग सब घर में प्यार से लक्ष्मी-लक्ष्मी कहकर पुकारने लगे थे। सभी लोगों को खुशी थी कि घर में एक नन्ही गुड़िया लक्ष्मी आ गई है। दादी अम्मा की खुशी को देखकर मालती की सास सुषमा भी काफी प्रफुल्लित लग रही थी और आज मुझसे दादी अम्मा की कड़वी बात आप ही मीठी नजर आने लगी थी। घर में जो नन्ही गुड़िया आ गई थी। आज सुषमा को अपनी सास सुभद्रा के अनुभव एवं सोच पर गुमान हो रहा था। फिर सुभद्रा ने अपनी बहू सुषमा को यह कह कर खुश कर दिया कि जानती हो सुषमा मैं क्यों खुश हूं? क्यों अम्मा? इस पर दादी अम्मा ने कहा कि सुषमा जिस घर में बेटियां नहीं होती है उस घर के माता पिता को शादी के मड़वा को देखने का अवसर नहीं मिलता है। जिस घर में बेटी की मरवा की शोभा लगती है वहां उस घर के माता-पिता जिंदगी की सबसे बड़ी खुशी पाते हैं। आज मेरी लक्ष्मी गुड़िया के आगमन ने तुम्हारी झोली भर दी है सुषमा। अब तुम्हारे आंगन में मड़वा लगेगी और मेरे बेटे के साथ तुम लोगों की खुशियां मे चार चांद लग जाएगी। आज सुषमा को अपनी सास के उन्नत विचार और अनुभव पर गुमान हो रहा था और घर में आई लक्ष्मी के आने से वह अपनी खुशियां नियंत्रित नहीं कर पा रही थी।

-डॉ० अशोक कुमार शर्मा, पटना, बिहार।

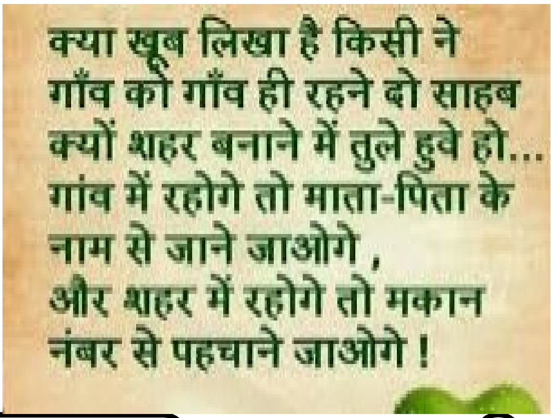

क्या खूब लिखा है किसी ने
गाँव को गाँव ही रहने दो साहब
क्यों शहर बनाने में तुले हुवे हो...
गांव में रहोगे तो माता-पिता के
नाम से जाने जाओगे ,
और शहर में रहोगे तो मकान
नंबर से पहचाने जाओगे !

फिल्म मेले में यादगार व शानदार फिल्में

-ब्रजभूषण चतुर्वेदी (बीबीसी)
इंदौर, मध्य प्रदेश

फिल्में आज के युग की यादों व वादों को दिखाती हैं। संस्कृति, संस्कार भव्यता, कला की सर्वोत्तम प्रस्तुति के साथ ही निर्देशन की अपने फन की छाप फिल्में छोड़ती है। इस बार भारत के 52वें अन्तराष्ट्रीय फिल्म समारोह (गोवा) में करीब 400 फिल्में 96 देशों से मंगाई गई। इन फिल्मों की छाप ऐसी थी कि दर्शक वाह वाह ही करते रहे। भारत की बंगला, भोजपुरी, तमिल, मलयालम, फिल्में के साथ मराठी फिल्मों का बड़ा जलवा रहा। यह समारोह ऐसा रहा जहां चीन, दक्षिण कोरिया, इंग्लैण्ड, जर्मनी, ब्राजील, रूस आदि की फिल्में विश्व भर के दर्शकों का दिल जीतती रही। कहीं वॉलीवुड की फिल्में हॉलीवुड व फ्रांस की याद दिलाती रही तो फर्ज व विचारों के साथ ‘‘गोदावरी’’ जैसी फिल्में दर्शकों के साथ दो-दो अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार भी ले गई।

यह विश्व का पहला रेकार्ड किसी समारोह का बना जब उद्‌घाटन समारोह पांच घंटे चला दर्शकों की वाह वाह की जोरदार तालियां ही चलती रही। सलमान खान, रणवीरसिंह, श्रद्धा कपूर, व गोवा की संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती रही। फिल्मों की दुनिया सभी के डांस में खो गई। शुभारंभ जैसा हुआ वैसा ही भव्य समापन भी हुआ। रणवीर कपूर, माधुरी दीक्षित, मनोज वाजपेयी के साथ ही प्रारंभ से अंत तक भारत की सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री हेमा मालिनी का जलवा बिखरता रहा। 96 देशों के या तो निर्माता निर्देशक ने कलाकारों ने इसका आनंद लिया तो लगभग 40 से अधिक पत्रकार वार्ताओं में फिल्मों की श्रेष्ठता की चर्चा होती रही।

हेमामालिनी को अभिनेत्री के 2021 का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार देते हुए अतिथिगण।

समारोह में करीब दस हजार से अधिक पत्रकार, मेहमान, डेलीगेट्स व सरकार के प्रतिनिधियों ने भाग लिया बल्कि 9—10 दिनों में फिल्मों ने विष्वभर के फिल्मी कलाकारों की प्रस्तुति दिखाई। ऐसा भव्य अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह षायद भारत की धरती पर पहली बार हुआ।

समारोह की शानदार फिल्में- क्लाउड एण्ड द मेन, हंडरेट इसर्स ऑफ ईयर लीडर, अभियान, द किंग आल ऑफ द वर्ल्ड, डी केस्टा हाउस (केकणी), रिंग वाईरिंग, (पुरूस्कृत फिल्में) गोदावरी (मराठी), सीज ऑफ द सी, टू हंट फार रेड अम्बर, कीयो, फाम रशिया विथ लव, योगा, ए हीरो समापन फिल्म।

इन फिल्मों के अतिरिक्त भारत के कलाकारों की व निर्देशनों की फिल्में जैसे दिलीप कुमार, निर्देशक बुद्धदेव दासगुप्ता की फिल्में। करीब 400 के लगभग फिल्में ने समारोह की यादें बढ़ाई मैंने सिर्फ 400 फिल्में 9 दिन में 40 फिल्म बनी व पंजीम तो वैसे ही खूबसूरत है लेकिन समुद्र किनारे अंतर्राष्ट्रीय फिल्मों का आनंद गोवा के आम दर्शकों ने पहली बार ही लिया होगा। इस बार 52वें ईफी में यह यादगार बात रही जो डेकोरेशन वहां की सरकार ने गोवा को सजाने एवं अन्तर्राष्ट्रीय मेहमानों को लुभाने के लिये किया था दो तीन बार बारिस ने धो दिया।

धैर्य रखिए!

-डॉ. माध्वी बोरसे,
रावतभाटा, राजस्थान

आजकल के समय में, सभी के अंदर धैर्य की बहुत कमी है, बहुत सी बार कर्मचारियों से गलती हो जाती है, पर उसे समझाने की जगह मालिक उस पर चिल्लाने लगता है, उसे डांटने लगता है! अब जब भी वह गलती करेगा उसे आपकी डांट याद आएगी, अगर यही बात हमने उन्हें समझदारी से समझाही होती तो जब भी वह यह गलती करता तो जानता की इसके पीछे क्या नुकसान है! बचपन में भी बहुत से बच्चों को इस चीज से गुजरना होता है, कभी-कभी माता पिता और टीचर्स में धैर्य की कमी से उन्हें डांट पड़ती है यहां तक की मार भी पड़ती है! अब वह छोटा सा बच्चा जब जब वह गलती करेगा तो उसे उनकी डॉट और मार ही याद आएगी! कितना अच्छा होता अगर उसके बड़े उसे प्यार से समझा दे और क्या सही है, क्या गलत है, सब में फर्क बताते, पर नहीं कभी-कभी बड़ों को यह लगता है, की शार्टकट रास्ता अपना लिया जाए, इस डांट फटकार से उस बच्चे पर क्या असर पड़ता है, उसका उन्हें अंदाजा भी नहीं, अब बड़े होते होते जब जब कोई और भी वह गलती करेगा तो वह बच्चा यही समझेगा की डांट ना और फटकारना इसका उपाय है क्योंकि उसने भी यही देखा, समझा, और सींखा! यहां तक की जब बड़ा हो जाएगा और कोई गलती करेगा तो खुद को सजा देगा इसीलिए आजकल बहुत से लोग कभी खुद को मारते हैं, चिल्लाते हैं, यहां तक की आत्महत्या तक कर लेते हैं क्योंकि उन्हें लगता है वह सजा के पात्र हैं! अगर हम इंसान है तो हमें हर बात में इंसानियत रखनी चाहिए! हम अपने बच्चों पर किसी तरह का दबाव तो नहीं डाल रहे हैं! क्या हम उन्हें छोटी-छोटी बात पर हाथ तो नहीं उठा रहे हे! क्या सबके सामने उनके बेज्जती तो नहीं कर रहे हो!

माता पिता और टीचर्स भगवान का रूप माने जाते हैं पर यह भी इंसानी व्यवहार नहीं है की हम अपनों से छोटो पर यहां तक कि किसी पर भी हाथ उठाए और क्रोध करें या मजाक उड़ाए! किसी की गरिमा को ठेस पहुंचाना, चाहे वह छोटा सा बच्चा ही क्यों ना हो, सरासर गलत है! यहां तक की गिड़गिड़ा कर, रोकर अपनी बात को मनवा ना भी अधीरता है!

अक्सर एक वाक्य पूछा जाता है की अकल बड़ी या भैंस बड़ी? क्योंकि अगर इंसान दिमाग से और शांति से कोई बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़े तो वह लड़ाई बहुत आसानी से लड़ सकता है, अपने दिमाग के बल पर ना कि हाथ पैरों से, और यही तो फर्क है इंसान और जानवर में! जानवर अपने बच्चों को बोलकर और समझदारी से अपनी बातों को समझा नहीं सकते हैं पर इंसान कर सकता है!

छोटी सी जिंदगी है, तो क्यों ना हम सभी से प्यार से, खुशी से, शिष्टाचार से, धैर्य से, सम्मान से, सत्कार से, अच्छाई से, समझदारी से पेश आए और सोचे, समझे कि अगर हम उनकी जगह होते तो कैसा व्यवहार चाहते, ठीक वैसा ही व्यवहार हमें किसी की गलती पर करना चाहिए! विशेष रुप से छोटे बच्चे के साथ! हां अगर कोई अपराध करे तो, कानूनी कार्यवाही उन अपराधियों के खिलाफ की जाए पर हमें खुद को जीवन में शांति चाहिए, प्रसन्न मन चाहिए तो हमें खुद को और दूसरों को हर बात समझदारी और धैर्य से समझानि होगी!

पहले तो हम अपने आप को यह बात समझाएं की हर एक चीज का समाधान हो सकता है! किसी पर भी अपने या अपनों से बड़ों के फैसले को दूसरों पर ना थोपे!

बहुत से बच्चे शादी होते ही कुछ महीनों में अपने मां-बाप से अलग हो जाते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि वह कभी नहीं समझेंगे की उनकी बहू बेटे उनसे क्या चाहते हैं! पर वो यह भूल जाते हैं की जब से वह मां-बाप बने है, तो उनकी चाहत के लिए ही तो जी रहे हैं, क्यों ना हम भी उन्हें ठीक वैसे ही समझाएं जैसे वह हमें बचपन में समझाते थे। हम उनको उनके बुढ़ापे में अलग क्यों कर दे! धैर्य से काम ले, हर बात पर जल्दबाजी, दुर्व्यवहार करना, अपशब्द का उपयोग करना बंद करें!

अगर किसी की गलती करने पर आप उस पर चिल्लाते हैं और अपशब्द बोलते हैं तो वह तो गुनाहगार है पर आप मानसिक रूप से बीमार है! खुद को पहचाने कि हम उस शक्ति से बने हैं, हम मैं बहुत सारा, धैर्य, स्नेह, शिष्टाचार और इंसानियत है!

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-
1–20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिए: पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान **2–20 से 40 वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री **3–40 वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, **4-सभी आयु वर्ग के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.
अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथि: 15 मार्च 2022

प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्या: **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन0553875

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी–93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विश्व हिन्दी सेवा संस्थान द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें:

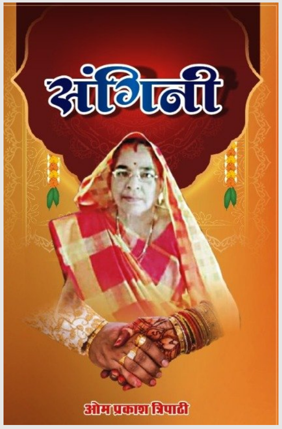

संगिनी :

रचनाकार:
डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी

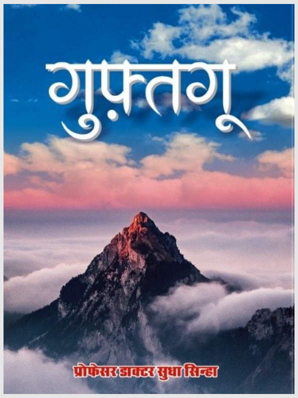

लेखक :
डॉ० सुधा सिन्हा

मनलाभ मंजरी :

रचनाकार :
श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव,
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

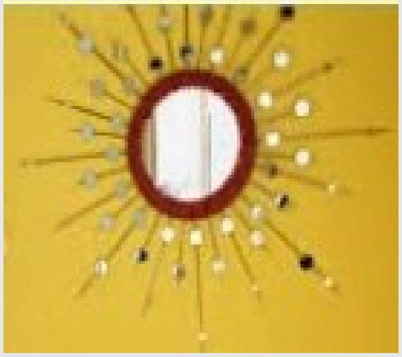

संपूर्णम! उत्पाद

भारतीयता बेमिशाल, गुणवत्ता लाजबाब,
विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।